प्रथम वर्ष कला

विषय- कथासाहित्य III

सत्र - II

(ऐच्छिक हिंदी)

पचपन खंभे लाल दीवारें - उषा प्रियंवदा

01	https://youtu.be/afgI7P6s9gM
02	https://youtu.be/PfEmKhpk0Ss
03	https://youtu.be/jYlEWRHpq2s
04	https://youtu.be/QJarhjweTx4
05	https://youtu.be/isikLTO_Ewc
06	https://youtu.be/S9yykz3XtoA
07	https://youtu.be/osXvJ0FfMRQ
08	https://youtu.be/Q5oOHaFAMYU
09	https://youtu.be/6j3Ryo1hTi8

1 उषा प्रियंवदाः जीवन परिचय

उषा प्रियंवदा हिंदी के आधुनिक उपन्यासकारों में एवं महिला कथाकारों में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। उन्होंने अपने संपूर्ण रचना संसार में आधुनिक समाज में स्थित नारी जीवन की व्यथा, पीडा, त्रासदी, एकाकीपन आदि को अंकित किया है। नारी के अंतरमन को स्पर्श करने की कोशिश की है। नारी समस्याओं से जुडे विषय चुनकर उनको अपने उपन्यास साहित्य के माध्यम से समाज के सामने लाने का सराहनीय कार्य उषा प्रियंवदा ने किया है। महिला लेखिका होने के कारण स्वानुभूति से नारी संबंधी व्यथा को पूरे प्रभावात्मकता के साथ चित्रित किया है। स्त्री–पुरुष मानसिक संघर्षों को अपने उपन्यास साहित्य के माध्यम से स्पष्ट किया है। स्वतंत्रता के बाद हिंदी उपन्यास साहित्य को नई दिशा देने का काम उषा प्रियंवदा ने किया। उन्होंने नारी जीवन की विसंगतियों का चित्रण किया है। साथ–साथ पाश्चात्य संस्कृति की चमक–दमक के कारण भारतीय नारी में हो रहे परिवर्तन को भी उन्होंने प्रमुखता से रेखांकित किया है। उषा प्रियंवदा ने अपने उपन्यास साहित्य में आधुनिक जीवन के बदलते परिवेश के अनुरूप नारी प्रतिमाओं में जो बदलाव आ रहा है इसका चित्रण बड़ी सफलता से किया है। जो प्रतिमाएँ नारी के नये प्रतिमान प्रस्तुत करता है।

उषा प्रियंवदा के उपन्यास साहित्य में नौकरी करनेवाली, मध्यमवर्गी, पढ़ी–लिखी, पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण त्रस्त, 'स्व ' के प्रति जागृत आदि बदलती नारी प्रतिमाओं का अंकन हुआ है। वर्तमान काल में नारी पढ.–लिख रही है। इससे नारी प्रतिमा में क्या परिवर्तन हुए हैं?, समाज में नारी ने कैसे प्रगति के मार्ग प्रशस्त किए?, घर परिवार में उसकी स्थिति क्या है? आदि सवालों के जवाब उषा प्रियंवदा के उपन्यास साहित्य में मिलते हैं। नारी के संदर्भ में समाज की सोच में क्या परिवर्तन हुआ? इससे नारी की स्थिति में क्या बदलाव आया? इन सभी सवालों के जवाब हमे उषा प्रियंवदा के उपन्यास साहित्य में मिलते हैं।

पहले नारी धार्मिक, पारंपरिक रूढ़ि, रीति रिवाज आदि समस्याओं से ग्रस्त थी। लेकिन वर्तमान काल में नारी उन समस्याओं के साथ पारिवारिक समस्याओं के चक्कर भी लगाने पड़ रहे हैं। वर्तमान नारी का जीवन उलझन पूर्ण मनःस्थितिओं से त्रस्त है। वैसे ही पाश्चात्य तथा भारतीय संस्कारों के बीच का टकराव। नारी पात्रों

की अनास्था, उदासी, भय, संत्रास, एकाकी एवं नारी पात्रों की छटपटाहट आदि बदलती नारी प्रतिमाओं का उषा प्रियंवदा ने बडे. अनोखे ढंग से रेखांकन किया है। अपने उपन्यास साहित्य में नारी को केंद्गबिंदु मानकर लेखिका ने उसकी पीड़ा को मुखरित किया है। नारी सशक्तता के बारे में उषा प्रियंवदा स्वयं लिखती है, "आज की दुनिया में स्त्रियाँ अधिक सशक्त है। यदि स्त्रियाँ खुलेपन से अपनी मनोवृत्ति व्यक्त कर रही है, तो उसे खुलेपन से स्वीकार करना होगा, क्योंकि हरेक को अधिकार है अपने को व्यक्त करने का, चाहे वह समाज के बन्धन तोड़ कर अपने पात्रों को खुलेपन से चित्रित करे या एक समाज–शास्त्री की तरह समाज से देख कर। "[1] नारी का खुलेपन से चित्रण करने का उषा प्रियंवदा समर्थन करती है। खुलेपन के चित्रण से नारी की वास्तविक समस्या समाज के सामने आ सकती है।

नई परिस्थितियाँ एवं नये ज्ञान के कारण नारी की प्रतिमा निरंतर तेजी से बदलती हुई दिखाई देती है। नारी अब पारंपरिक बंधनों को तोड़कर अपनी स्वतंत्र पहचान बना रही है। वहीं पहचान अन्य महिलाओं के लिए मार्गदर्शक हो यह प्रयास है।

1.1 जन्म

उषा प्रियंवदा का जन्म 28 सितम्बर 1932 में कानपुर में एक मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ। जन्म स्थान को प्रमाणित करते हुए उषा प्रियंवदा लिखती है, "मैं कानपुर जैसे भीड़ भरे नगर में मिल की चिमनियों के धुएँ से मटमैल आकाश के नीचे पली हूँ। "[2] इससे स्पष्ट होता है कि उषा प्रियंवदा का जन्म कानपुर में हुआ है एवं बचपन भी वहीं गुजरा है। जैसा मध्ययुगीन संतों के जन्म संबंधी विवाद रहे हैं। वैसे आधुनिक काल के साहित्यकारों के जन्म संबंधी विवाद नहीं दिखाई देता।

1.2 बचपन

उषा प्रियंवदा का बचपन कानपुर एवं लखनऊ में गुजरा। उषा प्रियंवदा के बाल्य अवस्था में ही उनके पिताजी का देहांत हुआ। बचपन से उषा प्रियंवदा को कहानियाँ पढ़ने और स्वयं की कहानियाँ गढ़ने की आदत–सी थी। उषा प्रियंवदा लिखती है, "जैसे मेरे बारह–तेरह साल के मन में एक अनजान उपन्यास कार बैठा हुआ था, जो न जाने कहाँ–कहाँ से कहानियाँ गढ़ता रहता था। कभी–कभी बच्चों के आग्रह से थक भी जाती थी और एक था राजा, एक थी रानी, राजा मर गया रह

गई रानी कहकर कथा उत्सव का समापन कर देती थी। "[3] बचपन में उषा प्रियंवदा की लिखी कहानियाँ बहुत ही प्रभावपूर्ण है। उषा प्रियंवदा ने छोटी–सी उम्र में ही देखा कि भारतीय समाज और संबंधी एक आश्रयहीन महिला के प्रति कितना क्रूर है। उनकी माँ की हर अवज्ञा एवं अवहेलना जहाँ उषा प्रियंवदा के मन को तीक्ष्ण तीरों से बांधती वहाँ उनका बाल मन छटपटाने लगता था लेकिन उनके पास चुप रह जाने के अतिरिक्त कोई उपाय नहीं रहता। उनकी माँ की अवज्ञा देखकर उनका बाल हृदय फट.ने लगता था। उन्हें तब से ही यह अनुभव होने लगा की, एक स्त्री को मात्र स्त्री होने से हीन और शूद्ग समझा जाता है। स्त्री को रुढ़िग्रस्तता, अचेतना, अज्ञान आदि से समाज ने बाँधे रखा था। इसी कारण हमे उषा प्रियंवदा के उपन्यास साहित्य में स्त्री पीड.ा का अहसास होता है। ननिहाल कानपुर उषा प्रियंवदा को अप्रिय लगता था क्योंकि वहाँ पुरुषों के खाने के बाद ही महिलाओं को खाना मिलता था। समाज लड़की को लड़की कहकर प्रतिबिम्बित करता है। उसका परिवार ही उस पर लड़की होने के कारण बंधन ड.ालता है। बचपन में एक प्रसंग में जब उन्होंने साइकिल सीखते ममेरे भाई को देखा तो उनके मन में भी साइकिल चलाने की इच्छा जागृत हुई किंतु तब दादी कहती है, "तुम लड़की हो, टाँग–वाँग टूट. गई तो लँगडी से शादी कौन करेगा? मैं तो तुम्हें आगे पढ़ाने के ही पक्ष में नहीं हूँ, अभी से चश्मा चढ़ गया है। "[4] इस प्रसंग से बाल्यकाल में ही उषा प्रियंवदा को नारी व्यथा का अनुभव हुआ।

छठी–सातवीं कक्षा में उषा प्रियंवदा ने चंद्गकांता सन्तति, चाँद, माधुरी पत्रिकाएँ पढ़ी हैं। विविध उपन्यास एवं बंगला अनूदित किताबों में माधवी कंकण, शशांक, आनन्द मठ वैसे ही प्रेमचंद, कौशिक, भगवती चरण वर्मा आदि को उषा प्रियंवदा ने बचपन में ही पढ़ा था। इस साहित्य को पढ़ने से उषा प्रियंवदा को स्त्री अस्मिता के लिए लिखने की प्रेरणा मिली। उनके उपन्यास साहित्य में व्याप्त नारी पीड.ा को पढ़कर वह व्यथित होती थी। वह लिखती है, "मुझे पहली बार अनुभव हुआ कि स्त्री जाति की परवरिश उसे समाज से मिली है। मेरे अन्दर जो विद्गोह और आक्रोश के बिन्दु थे, धीरे–धीरे प्रकट होने लगे फिर भी मेरा दृष्टिकोण सीमित ही रहा। मेरी प्रारम्भिक कहानियों में अधिकतर स्त्री पात्र समाज और परिस्थितियों से उभर नहीं पाए उनमें एक प्रकार की हताशा भरी स्वीकृति थी। "[5] इस कारण उषा प्रियंवदा के शुरूआती लेखन में विद्गोह और आक्रोश नहीं दिखाई देता किंतु बाद

में धीरे–धीरे नारी चेतना चेतित होती दिखाई देती है। उषा प्रियंवदा की प्रथम कहानी 'बालिका ' विद्यालय की स्कूली पत्रिका में छपी थी। उषा प्रियंवदा अपनी प्रारंभिक कहानियों के बारे में लिखती है, "मैंने तब तक यही देखा था दुःख को चुपचाप घूँट लेना अन्याय के बावजूद कोई प्रतिक्रिया न दिखाना, परिस्थितियों को रो–धोकर स्वीकार कर लेना, सीमित दायरों में बद्ध रहना, मैं हर ओर यही देख पा रही थी और यह स्थितियाँ मेरी सारी प्रारम्भिक कहानियों में चित्रित हुई है। "[6] इस कारण उषा प्रियंवदा के प्रारंभिक साहित्य में दुःख सहना, अन्याय का प्रतिरोध न करना आदि बातें दिखाई देती है।

कॉलेज जीवन के प्रारंभिक दौर में ही लोकप्रिय पत्रिका 'सरिता ' में उषा प्रियंवदा की कहानियाँ प्रकाशित होने लगी थी। आरंभिक कहानियाँ बिना कॉपी रखे प्रकाशित करने के कारण उनकी कहानियों में से पचास प्रतिशत भी उपलब्ध नहीं है। उषा प्रियंवदा को बचपन से साहित्य पढ़ने और लिखने में रुचि थी। बचपन से ही बड़ी–बड़ी नामी हस्तियों का सान्निध्य उषा प्रियंवदा को प्राप्त हुआ है। गोविन्द बल्लभपंत, जवाहरलाल नेहरू, इंदिरा गांधी, फिरोज गांधी, कृष्ण मेनन, लालबहादुर शास्त्री, श्री वी. पी. गिरी आदि हस्तियों का सान्निध्य मिला। इसी कारण उषा प्रियंवदा आज महिला लेखिकाओं में अपनी नई पहचान स्थापित करने में सफल हुई दिखाई देती है।

सारांशतः कहा जा सकता है कि उषा प्रियंवदा को बचपन से ही बडे.–बडे. साहित्यकारों की किताबें पढ.ने को उपलब्ध हुई। साथ ही नामी हस्तियों से उन्हें मार्गदर्शन एवं साहित्य लिखने की प्रेरणा मिली है। बचपन से उन्हें कहानी गढ़ने की आदत थी। बचपन से ही उनकी कहानियाँ पत्रिकाओं में छपना शुरू हो गयी थी।

1.3 परिवार

उषा प्रियंवदा अत्यंत समृद्ध परिवार से है। उषा प्रियंवदा ने अपने नाम के साथ माँ का नाम 'प्रियंवदा ' जोड. लिया। इसी कारण उनको साहित्य जगत में 'उषा प्रियंवदा ' नाम से पहचाना जाता है। पिता का नाम 'दामोदर प्रसाद सक्सेना ' है। पिता के देहांत के समय उषा प्रियंवदा की उम्र दो साल थी। उनके परिवार में माँ, दो बडी बहनें जिनमें श्रीमती कमला सहाय जिनके पति श्री यदुपति सहाय इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अग्रेंजी के प्रोफेसर थे। कामिनी हाँडा जिनके पति

गुजरात में आर्मी मेजर थे तथा दो बडे. भाई, शिब्बन लाल और होरी लाल सक्सेना जिसमें से शिब्बन लाल सक्सेना अपने समय के जाने माने स्वतंत्रता सेनानी एवं बरसों तक लोकसभा के सदस्य रहे हैं। पिता के चाचा, चाची और उनकी बेटी, चाचा के साले और सलहज, उनकी विगत बुआ की सौत, दादी एवं नौकर–चाकर, उनका ममेरा भाई प्रकाश, जो कानपुर पढ़ रहा था। आदि लोगों का भरा–पूरा परिवार था। माँ प्रियंवदा देवी को पति के मृत्यु के बाद घर परिवार की जायदाद में न माँ का, न उनके बच्चों को हिस्सा दिया। उषा प्रियंवदा जीवन यापन करते समय कानपुर, लखनऊ, इलाहाबाद, देहरादून, आजमगढ़, हरिद्वार, दिल्ली आदि बड़े–बडे. शहरों से उनका संपर्क आया। सन् 1948 में उनका परिवार दिल्ली में रहने लगा था। परिवार के सभी सदस्य शिक्षित होने के कारण उन्हें लड़की या स्त्री होने का हीन भाव का अनुभव नहीं मिला बल्कि स्नेह ही मिला। उषा प्रियंवदा कायस्थ बिरादरी की है।

सारांशतः उषा प्रियंवदा अत्यंत समृद्ध परिवार से थी। माँ का नाम अपने नाम के आगे लगाकर उषा जी ने परंपरागत विचारों को छेद दिया है। बदलाव की शुरूआत उन्होंने स्वयं से ही की थी।

1.4 शिक्षा–दीक्षा

उषा प्रियंवदा की आरंभिक शिक्षा वेदभारती स्कूल, बालिका विद्यालय, कानपुर में हुई। छात्र जीवन में उनपर सुमित्रानंदन पंत, बच्चन आदि का विशेष प्रभाव था। छात्र जीवन में वह अध्यापिकाओं की प्रिय छात्रा रही है। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य में पीएच्.डी. की उपाधि प्राप्त कर तीन साल दिल्ली के लेडी श्रीराम कॉलेज में अध्यापन करने के बाद फुलब्राइट स्कॉलरशिप पर अमेरिका प्रस्थान किया। जहाँ उषा प्रियंवदा ने ब्लुमिंगटन, इंडियाना में दो वर्ष पोस्ट डॉक्टरल स्टडी की। उषा प्रियंवदा अपनी काबिलीयत के बलबूते विस्कांसिन विश्वविद्यालय, मैडीसन में दक्षिणेशियाई विभाग में प्रोफेसर थी। संपूर्ण अध्ययन अग्रेंजी में करने के बाद भी उषा प्रियंवदा ने अपनी लेखन की भाषा हिंदी ही रखी। इससे स्पष्ट होता है कि उषा प्रियंवदा को हिंदी के प्रति लगाव है। इस संदर्भ में डॉ. ओम प्रकाश शर्मा लिखते हैं, "अग्रेंजी साहित्य के गहन अध्ययन के साथ हिंदी के प्रति सहज रुचि ने इनके चिंतन और अभिव्यक्ति को विशिष्ट धरातल प्रदान किया है, साथ ही

देश–विदेश के भ्रमण के अनुभव ने इनकी साहित्यिक चेतना को बृहत्तर आयाम दिया है। " [7] देश–विदेश के भ्रमण के कारण उनकी साहित्यिक समझ विस्तृत हुई। भ्रमण और अनुभव के कारण उषा प्रियंवदा का साहित्य उच्च कोटी का हुआ। उनकी आरंभिक कहानियाँ 20–25 वर्ष की आयु में 'सरिता ' पत्रिका में उषा सक्सेना नाम से प्रकाशित हुई है। बाद में नाम के कारण रचनाओं के बारे में कुछ भ्रामक स्थिति उत्पन्न होने के कारण माँ 'प्रियंवदा ' के नाम को अपने नाम के आगे जोड़कर 'उषा प्रियंवदा ' इस नाम से निरंतर लेखन शुरू किया है।

सारांशतः उषा प्रियंवदा की शिक्षा विश्वविख्यात में हुई है। उषा प्रियंवदा उच्च विद्याविभूषित है। अग्रेंजी एवं हिंदी के साथ विश्व साहित्य का उन्हें विस्तृत ज्ञान है।

1.5 साहित्य लेखन की प्रेरणा

छात्रावस्था से उषा प्रियंवदा को साहित्य पढ़ने में बड़ा आनंद मिलता था। इसी अवस्था में उषा प्रियंवदा सुमित्रानंदन पंत से प्रभावित थी। इसलिए वे लिखती है, "शायद सुमित्रानंदन पंत से प्रभावित हुई हूँ। छात्रावस्था में बहुत शामे पंत जी के घर बीती है, शांती जोशी मेरी फिलासाफी की प्राचार्य थी और सुमित्रानंदन पंत के हर अभ्यागत को पंत सुमित्रानंदन के हाथ की उगाई सब्जियाँ उपलब्ध रहती थी। "[8] बचपन में कविता पाठ, पंत सुमित्रानंदन के घर की शामें, फिराक साहब का अप्रत्याशित लाड, श्रीपत जी का लेखन आदि बातों के संपर्क में उषा प्रियंवदा बाल्यावस्था से ही दी। सरिता, कल्पना, कृति आदि पत्रिकाओं से उषा प्रियंवदा ने जन्म लिया। सेवा सदन का आदर्शवादी अन्त, विष वृक्ष और कृष्णकांत का बिल में पतियों का मौंन अन्याय सहना, विश्वंभरनाथ शर्मा कौशिक की, माँ में अपने वात्सल्य प्रेम की बलि आदि बातों ने स्त्री पीड़ा के बारे में लिखने को उषा प्रियंवदा को प्रेरित किया। उषा प्रियंवदा को अच्छी लेखिका बनने के लिए फिराक साहब एक नुस्खा देते रहते थे, "नहीं तो हिंदीवालों की तरह एकतरफी होकर रह जाओगी–बिना विश्वसाहित्य पढे. कोई अच्छी लेखिका नहीं बन सकती।" [9] बचपन से ही अच्छे साहित्यिक बनने के उपदेश उषा प्रियंवदा को मिलते थे। प्रतिभा संपन्न व्यक्तित्व बनने के लिए पढ़ना आवश्यक होता है। पढ़ने का महत्व उषा प्रियंवदा को बचपन से ही समझ गया था। हिंदी के प्रति रुचि कैसे निर्माण हुई इस संदर्भ में उषा प्रियंवदा लिखती है, "प्रेमचंद साहित्य से मेरी हिंदी शिक्षा और साहित्य प्रेम प्रारम्भ

हुआ। वैसे हिंदी तो आती ही थी, मातृभाषा थी, परंतु आठवीं क्लास के बाद गर्मियों की छुट्टी में मामा जी के घर फतेहगढ़ जाना हुआ और वहाँ मुझे मामी जी की अलमारी में चाँद, माधुरी और हंस के सारे अंक सुरक्षित रखे हुए मिले। उन्हीं में प्रेमचन्द्ग के उपन्यास धारावाहिक रूप से प्रकाशित हुए हैं। जब ये पत्रिकाएँ मेरे हाथ लगी, तो मैं दुनिया, जहान, बहनों के साथ गाना–बजाना, शाम की संध्या हवन सब भूल कर उनसे ऐसे चिपकी कि जैसे गुड़ से चींटी। स्कूल खुलने पर पाया कि यह सब स्कूल की लायब्रेरी में पुस्तकाकार थी। उसके बाद 'गोदान ' और 'निर्मला ' का अनुवाद भी। अमेरिका में विद्यार्थियों को पढ़ाने का यह नतीजा है कि नामवर जी मेरी भाषा को प्रेमचन्दीय और गगन गिल जैसी कवि 'अपडेटेड ' कहते हैं। "[10] उषा प्रियंवदा पर प्रेमचंद के साहित्य का गहरा प्रभाव दिखाई देता है। इस संदर्भ में उषा प्रियंवदा लिखती है, "प्रेमचन्द मेरे लेखकीय जीवन के प्रेरणा स्रोत रहे हैं। "[11] उषा प्रियंवदा अपनी कमी को न हिचकिचाते हुए स्वीकार करते हुए लिखती है, "मुझे दुःख है कि मैंने अधिक दलित लेखन नहीं पढ़ा। विदेश में रह कर सम्पर्क रखना कठि.न होता है। "[12] विदेश में होने के कारण उनको दलित साहित्य के बारे में जानकारी प्राप्त करना शायद मुश्किल होता होगा। इस बात पर वह स्वयं दुःखी है।

सारांशतः कहा जा सकता है कि उषा प्रियंवदा के लेखन के प्रेरणास्रोत प्रेमचंद एवं सुमित्रानंदन पंत रहे हैं।

1.6 वैवाहिक जीवन

उषा प्रियंवदा अपने हुनर के कारण विस्कांसिन विश्वविद्यालय, मैडीसन में दक्षिणेशियाई विभाग में प्रोफेसर रह चुकी है। उषा प्रियंवदा के पति 'किम विल्सन ' हॉवर्ड विश्वविद्यालय में प्रोफेसर रह चुके हैं। दोनों एक दूसरे से सोला सौ मिल की दूरी पर रहते थे। किम के बारे में उषा प्रियंवदा लिखती है, "उनकी प्राध्यापकीय और आलोचकीय दृष्टि को मैं हलके से उनके विषय 'मध्यकालीन फ्रांसीसी साहित्य ' की और इंगित कर देती हूँ। शायद हम लोग अलग–अलग शहरों में अलग–अलग विश्वविद्यालयों और विभागों में है। इसलिए सर्वदा साथ रहनेवाले दंपतियों की तरह छोटी–छोटी झुँझलाटें दिन–रात की परेशानियाँ और एक–दूसरे से ऊब हमारे संबंधों में नहीं है। इसलिए हम एक दूसरे की मनःस्थिति को पहचानते हैं और एक–दूसरे

को स्पेस या छूट देते रहते हैं। अपने–अपने व्यक्तित्व को पूरी तरह अभिव्यक्त करने को। "[13] दोनों उच्च विद्याविभूषित होने के कारण उनका वैवाहिक जीवन आनंद पूर्ण रहा है। 'किम विल्सन ' एक प्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक है। जून 2014 के 'वागर्थ ' में उषा प्रियंवदा ने अपने पति बीमार होने के बारे में लिखा है, "मेरे पति, जो स्वयं एक प्रसिद्ध स्कॉलर और हॉवर्ड से सेवानिवृत्त प्रोफेसर है, वर्ष 2009 से लगातार बीमार चल रहे हैं। जैसा कि टैगोर ने कहा है–जीवन साहित्य से बड.ा है, मैं अपना सारा समय अपने पति की सेवा–सुश्रुषा में व्यतीत करती हूँ। अभी दो दिन पहले ही वे लम्बा समय अस्पताल में बिता कर लौटे हैं। मुझे बेहद उत्साहित करते रहते हैं। दिन का बड़ा हिस्सा उनकी देखभाल और रसोई आदि कार्यो में बीत जाता है। "[14] पाश्चात्य परिवेश में रहते हुए भी उषा प्रियंवदा पति की सेवा कर रही है। इससे स्पष्ट होता है कि भूमण्डलीकरण के इस दौर में उषा प्रियंवदा मानवीय मूल्यों को बचाने के लिए स्वयं प्रयत्नशील है। उषा प्रियंवदा के साहित्य में टूटते मानवीय मूल्यों के विघट.न के प्रति गहरी संवेदना दिखाई देती है। उषा प्रियंवदा एक संवेदनशील लेखिका है।

अतः कहा जा सकता है, उषा प्रियंवदा का वैवाहिक जीवन अत्यंत सामंजस्यपूर्ण रहा है। पति–पत्नी उच्च विद्याविभूषित है।

1.7 पुरस्कार एवं सम्मान

उषा प्रियंवदा की उपलब्धियों में उनके कथा संग्रह एवं उपन्यास विविध विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में समाविष्ट है। पुरस्कारों में उषा प्रियंवदा को, पद्मभूषण डॉ. मोटूरि सत्यानारायण पुरस्कार मिला है। जो एक साहित्यिक पुरस्कार है। यह पुरस्कार भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अंतर्गत केंद्गीय हिन्दी संस्थान द्वारा किसी ऐसे भारतीय मूल के विद्वान को दिया जाता है। जिसने विदेश में हिंदी भाषा या साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया है। इस पुरस्कार का प्रारंभ तामिलनाडू के हिंदी सेवी एवं विद्वान मोटूरि सत्यनारायण के नाम पर 1989 में हुआ था। इस पुरस्कार में एक लाख रुपये नकद, एक स्मृतिचिन्ह, प्रशस्तिपत्र शामिल है। यह पुरस्कार भारत की राष्ट्रपति मा. प्रतिभाताई पाटील इनके कर कमलों से प्रदान किया गया है। यह अत्यंत प्रतिष्ठित पुरस्कार उषा प्रियंवदा को प्राप्त है।

इंडियान स्टडीज विभाग में संलग्न रहते हुए 1977 में उन्हें'फुल प्रोफेसर ऑफ इंडियन लिट्रेचर' का पद मिला। 2002 में अवकाश लेकर अब पूरा समय लेखन, अध्ययन और बागबानी में बिता रही है।

1.8 कार्य

उषा प्रियंवदा ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य में पीएच्.डी. की उपाधि प्राप्त की है। तत्पश्चात् उन्होंने तीन साल तक अध्यापिका के रूप में दिल्ली के लेडी श्रीराम कॉलेज में सेवा की 1961 में उन्हें फुलब्राइट छात्रवृत्ति मिली। उषा प्रियंवदा फुलब्राइट छात्रवृत्ति पर अमेरिका जाने के पश्चात् वहाँ कुमारी औलिव रेडिक एवं बडे. भाई के उपदेश के बारे में लिखती है,"याद रखें कि आप सब भारत का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। बडे. भाई भी जब कभी–कभी पत्र लिखते तो यही लिखते अपने परिवेश और परिवार के आदर्श याद रखना। भारतीय होने की गरिमा निभाना। कभी भी अपने आचरण से अपनी संस्कृति को धब्बा न लगने देना। "[15] उषा प्रियंवदा भले ही विदेश में रहती है लेकिन अंदर से भारतीय संस्कृति, भारतीय नैतिक मूल्यों आदि पर आस्था है। अंग्रेजी साहित्य के अध्ययन के लिए वे संयुक्त राष्ट्र अमेरिका को गयी। जहाँ ब्लूमिल्टन, इंण्डियान में दो वर्ष पोस्ट डाक्टरल स्टडी की। बाद में विस्कासिन विश्वविद्यालय, मेडिसिन में अध्यापन कार्य करते समय उषा प्रियंवदा की शादी प्रसिद्ध भाषा विद्वान 'श्री किम विल्सन ' से हुई। आज–कल उषा प्रियंवदा अमेरिका के प्रोफेसर पद से सेवानिवृत्त होकर अपने पति की सेवा कर रही है। देश–विदेश में एवं विविध विश्वविद्यालयों में हुई संगोष्ठियों के निमंत्रण पर उन्होंने हिस्सा लिया। उनकी प्रथम प्रकाशित कहानी "लाल चूनरी " है। मीराबाई एवं सूरदास आदि पर उन्होंने अंग्रेजी में लेखन किया। उनकी विविध कहानियाँ ज्ञानोदय, सारिका, विनोद, लहर, धर्मयुग, नई कहानियाँ, कहानी –कल्पना, कृति आदि प्रतिष्ठित पत्र–पत्रिकाओं में छपी है।

सारांशतः कहा जा सकता है उषा प्रियंवदा बचपन से होशियार रही है। शिक्षा ग्रहण कर उन्होंने प्रोफेसर पद पर काम किया है।

2 उषा प्रियंवदा : रचना परिचय

2.1 उपन्यास साहित्य

आधुनिक महिला उपन्यासकारों में उषा प्रियंवदा का स्थान शीर्ष है। उनका पहला उपन्यास'पचपन खंभे लाल दीवारें ' है। जिसका का प्रकाशन वर्ष सन् 1962 है। इसमें नारी शोषण की कथा है। इस उपन्यास का बी. बी. सी लंदन द्वारा मंचन हुआ है। इस कारण यह उपन्यास काफी लोकप्रिय रहा है। दूसरा उपन्यास 'रुकोगी नहीं राधिका ' है। इसका प्रकाशन वर्ष सन् 1967 है। इसमें नारी के भटकन, अजनबीपन की कहानी है। इस उपन्यास से उषा प्रियंवदा को काफी मात्रा में प्रसिध्द मिली। 'शेष यात्रा ' उपन्यास का प्रकाशन वर्ष सन् 1982 है। इस उपन्यास में अनु के साहस एवं संघर्ष की कहानी है। 'अन्तर्वंशी ' उपन्यास का प्रकाशन वर्ष सन् 2000 है। जिसमें पाश्चात्य एवं भारतीय संस्कारों के टकराहट में फँसी नारी का चित्रण किया है। साथ ही नारी के 'स्व ' की, अस्तित्व की विलुप्त खोज है। 'भया कबीर उदास ' उपन्यास का प्रकाशन वर्ष सन् 2004 है। उपन्यास में नये रूप की कथावस्तु है। जो मानवीय मन की चिरन्तन लालसाओं, कामनाओं, उदासिओं और निराशाओं का अत्यंत सहज ढंग से अंकन है। उषा प्रियंवदा के उपन्यास साहित्य के बारे में डॉ. ओमप्रकाश शर्मा लिखते हैं, "इनके उपन्यासों में उच्चवर्गीय जीवन की भावहीनता, बौद्धिक भौतिकता के अतिरेक के कारण टूट.ते पारिवारिक संबंधों को चित्रित किया गया है। उच्च तथा मध्यमवर्गीय परिवारों में नारी के शोषित जीवन के विभिन्न पहलुओं का पर्दाफाश किया गया है। " [16] उषा प्रियंवदा ने उपन्यास साहित्य में उच्च वर्ग के खोखलेपन को उज़ागर किया है। साथ ही नारी के विविध रूपों को चित्रित किया है।

2.1. पचपन खंभे लाल दीवारें

यह उषा प्रियंवदा का पहला उपन्यास है। जिसमें एक भारतीय नारी की सामाजिक आर्थिक विवशताओं से जन्मी मानसिक यंत्रणा का बड़ा मार्मिक चित्रण हुआ है। उपन्यास में सुषमा आधुनिक नारी के आत्मसंघर्ष का प्रतिनिधित्व करती है। छात्रावास के 'पचपन खंभे और लाल दीवारें ' उन परिस्थितियों के प्रतीक है। जिनमें रहकर सुषमा को ऊब और घुट.न का तीखा अहसास होता है लेकिन फिर भी उन परिस्थितियों के बीच जीवन यापन करना उसकी नियति बन जाती है। उपन्यास में नायिका सुषमा के कष्टमय जीवन का चित्रण हुआ है। वह एक शिक्षित अध्यापिका के रूप में चित्रित है। वह एक मध्यमवर्गीय परिवार की बडी बेटी है। सुषमा की पढ़ाई एम. ए. तक हुई है लेकिन घर की परिस्थितिवश सुषमा कॉलेज में अध्यापिका की नौकरी कर परिवार का भार सँभालती है। माँ–बाप एवं भाई –बहनों के सुख के कारण सुषमा अपने आपको मिट.ाती हुई दिखाई देती है। पिता पक्षघात से पीड़ित है। इसलिए परिवार की जिम्मेदारी सीधे सुषमा के कंधों पर आ जाती है। सुषमा को दो बहनें और दो भाई है। उनके पढ.ाई और उनके भविष्य का उत्तरदायित्व भी सुषमा पर निर्भर होता है। सुषमा आत्मपीड़ा से ग्रस्त है, सुषमा एक द्वंद्व से उत्पन्न कुण्ठ.ा की शिकार है। पारिवारिक जिम्मेदारी के कारण वह अपनी सारी अतृप्त आकांक्षाओं से पूर्ण जीवन नहीं गुजार देना चाहती है। सुषमा की नील नामक युवक से मित्रता होती है। नील से सुषमा का परिचय संयोगवश होता है। नील के प्रेम ने सुषमा के जीवन में सरलता का संचार किया। नील के अत्यधिक आग्रह करने पर भी सुषमा विवाह न कर सकी क्योंकि नील उससे पाँच वर्ष उम्र में कम था। सुषमा परिवार की जिम्मेदारी नहीं छोड़ना चाहती थी। सुषमा के कर्तव्य एवं भावना संघर्ष, अशान्ति तथा मानसिक अन्तर्द्वंद्व आदि मनोभावों की स्थिति का मनोवैज्ञानिक चित्रण अंकित करने में उषा प्रियंवदा काफी हद तक सफल रही है। मानसिक अन्तर्द्वंद्व में एक और सुषमा नौकरी कर घर की सारी अर्थव्यवस्था सँभालना चाहती है। तो दूसरी ओर वह विवाह करके पति और उसका प्यारा घर और परिवार चाहती है। दोनों एक साथ प्राप्त करना उसके लिए असंभव–सा है।

उपन्यास में दूसरे एक प्रसंग में कॉलेज में सुषमा के साथ स्वाति नामक सह अध्यापिका है। जो सुषमा के समान भारतीय विवाह परंपरा पर विश्वास नहीं रखती। वह विवाहपूर्व ही गर्भवती होती है। इसी वजह से कॉलेज में सभी स्वाति की निंदा

करते हैं। स्वाति इस कारण आत्महत्या का विचार करती है, लेकिन बाद में आत्महत्या का विचार न कर स्वाति वहाँ से भाग जाती है। काफी समय बाद स्वाति का विवाह उससे बडे. आयु के एक व्यक्ति के साथ होता है। लेकिन सुषमा कोई ऐसा बर्ताव नहीं करती जिससे अध्यापिका पद की गरिमा और परिवार की इज्जत को कोई दाग लगे। परिवार एवं पद दोनों का दायित्व सुषमा के लिए महत्वपूर्ण है। परिवार के बोझ के कारण वह दिन–रात मेहनत करती है। उसकी नियति 'पचपन खंभे एवं लाल दीवारों ' के बीच घुट.कर रहना बन जाती है। सुषमा के अंदर की प्रेयसी दीवारों को लाँघ कर भागना चाहती है लेकिन वह ऐसा नहीं कर पाती।

उषा प्रियंवदा ने सुषमा के माध्यम से एक शोषित पुत्री की प्रतिमा के रूप में नायिका को ढ़ाला है। इस कारण यह उपन्यास समकालीन हिंदी उपन्यास–साहित्य में विशेष रूप से चर्चित रहा है। 'पचपन खंभे लाल दीवारें ' उपन्यास में उषा प्रियंवदा ने सुषमा को अत्याचार को सहती पुत्री के रूप में चित्रित किया है। इस उपन्यास में सुषमा ने नवीन मूल्यों की स्थापना की है।

2.2. रुकोगी नहीं राधिका

उषा प्रियंवदा का यह बहुचर्चित उपन्यास है। प्रस्तुत उपन्यास एक ऐसी लड़की की कहानी है जो अपने–आप में उलझ गयी है। इस उपन्यास में एक ऐसा परिवार है जिसका प्रत्येक सदस्य एक–दूसरे से अलग–अलग होकर जीता है। उपन्यास में एक औपचारिकता, निस्वाद उत्तरदायित्व, नैतिक व्यावहारिकता की नीरसता द्वारा एक–दूसरे से बिखरे लोग है। उपन्यास की नायिका राधिका के बचपन में ही माँ के स्वर्गवास के बाद पिता का परिपूर्ण स्नेह राधिका को मिलता है, किन्तु जब पिता अचानक विद्या नामक एक युवती के साथ विवाह करते हैं तो राधिका को गहरी चोट लगती है और उसे विद्या से ईर्ष्या होती है। पुनः विवाह के बाद पिता के स्वर की टूटी और औपचारिक आवभगत के कारण राधिका अकेलापन और उदासीनता महसूस करती है। जवान बेटी के रहते पिता ने अपने विवाह का विचार किया इस बात से राधिका का मन कटुता से भर उठता है। स्वतंत्रता चाहते हुए भी आश्रय ढूँढ़नेवाली कुण्ठित मातृ–हीन राधिका को पिता से बहुत लगाव है किन्तु पिता के सौम्य शिक्षित अत्याधिक अन्तमुर्खी मितभाषी विद्या के साथ पुनर्विवाह कर लेने से राधिका आक्रोश में डैन के साथ विदेश चली जाती है।

पिता के द्वारा किये गये अन्यायों को वह अन्त तक भूल नहीं पाती। विदेश में जाकर अपने परिवेश के प्रति व्यग्रता और उस परिवेश में अकेलापन महसूस करती है। आगे राधिका का परिचय अक्षय और मनीष से होता है। वे दोनों राधिका से आकर्षित है। अक्षय में चारित्रिक गांभीर्य और शालीनता है, तो मनीष में यौवनसुलभ आकर्षण है। दोनों राधिका को विविध स्थानों पर घुमाने ले जाए करते हैं। अक्षय और मनीष राधिका के आगे विवाह का प्रस्ताव रखते हैं। राधिका इनके प्रस्तावों को ठुकरा देती है। इसी बीच राधिका की सौतेली माँ विद्या की निंद की गोलियाँ खाने से मृत्यु हो जाती है। विद्या सदा घुटन, अभाव और असमाधान के वातावरण में रहने के कारण मृत्यु को स्वीकार लेती है। पिता तब स्नेह से राधिका को अपने पास रहने को बुलाते हैं तो वह इन्कार कर देती है। राधिका इस घुटन भरे वातावरण को सह नहीं सकती। पापा के चाहने पर भी राधिका वापस नहीं आती क्योंकि राधिका हमेशा अपने अस्तित्व एवं स्वतंत्रता की खोज में भट.कती रहती है।

उषा प्रियंवदा ने इस उपन्यास में राधिका को एक प्रगतिशील पुत्री के रूप में प्रस्तुत किया है। विदेश से लौट.कर अपने लोगों से मोहभंग होते देख अपनो के प्रति लगाव होकर भी राधिका वापिस नहीं आती। राधिका स्त्री–पुरुष संबंध में पूर्ण स्वच्छंदता चाहती है। राधिका इलेक्ट्राकॉम्प्लेक्स ग्रंथी से ग्रसित है। उपन्यास में राधिका स्वच्छंद, जागृत बेटी के रूप में चित्रित है। राधिका अपने अधिकारों के प्रति जागृत दिखाई देती है।

2.3. शेष यात्रा

अनु 'शेष यात्रा' उपन्यास की नायिका है। अनु का विवाह विदेश में बसे डॉ. प्रणव के साथ होता है। अनु के परिवारवाले विदेशी चमक–दमक से आकर्षित है। वह डॉ. प्रवण की कुछ भी जानकारी न लेते हुए अनु का विवाह कर देते हैं। डॉ. प्रणव अनु की सुंदरता से आकर्षित है। अनु डॉ. प्रणव के अपने फैसले का शिकार हुई वरना 'वैसा घर वैसा वर' न तो उसके सपनों में था न सामर्थ्य में। गली मोहल्लोंवाले परिवार से निकलकर वह लड़की अचानक अमेरिका जा बसी डॉ. प्रणव कुमार की पत्नी बनकर सबकुछ जैसे पलक झपकते बदल गया। घर परिवेश रहन–सहन खान–पान। अनु ने बड़ी मुश्किल से अपने को सँभाला और प्रणव की आकांक्षाओं, रुचियों के अनुरुप ढाल लिया। दिन–दिन डूबती चली गई प्यार की

गहराइयों में लेकिन शीघ्र ही उसे लगने लगा कि वह वहाँ अकेली है। प्रणव की तो छाया तक उन गहराइयों में नहीं। वह मात्र तैराक है भावमयी लहरों को सैंदकर प्रसन्न होनेवाला एक महत्त्वाकांक्षी और अस्थिर पुरूष। उसे रोज अलग–अलग महिलाओं के साथ रहने की आदत है।

'शेष यात्रा' उपन्यास की नायिका अनु बी. एस्सी. करने के बाद भी अपने पति द्वारा प्रताड.ना मिलने पर विरोध नहीं करती। पति प्रणव कुमार डॉक्टर है। उन्हें हर दिन नयी–नयी औरतों से दोस्ती करना एवं उनसे शारीरिक संबंध रखना आदि बातें पसंद है। यह सब अनु को पता चलने पर, पति– पत्नी में तू–तू मैं–मैं होती है। तब डॉ. प्रणव अनु को पागल घोषित करता है। फिर भी अनु प्रणव के साथ रहने को सहमत है लेकिन प्रणव नहीं मानता। दोनों में तलाक होता है। तब अनु हताश होती है, रोती है, गिड़गिड़ाती है क्योंकि विदेश में अनु का कोई अपना नहीं था। ठ.गी गयी अनु अपनी सुंदरता, अपने संस्कार और सहज विश्वासी मन है। इसलिए वह आत्महत्या नहीं करती। वह स्वयं दलित आश्रित नहीं रहती। जीवन को यथार्थ और स्वावलंबन से यापन करती है। दिव्या नामक सहेली अनु में चेतना जागृत करती है। साहस बढाती हैं, मैं अच्छी हूँ, मेरा चेहरा बुरा नही हैं, मैं खाना अच्छा पकाती हूँ, मैं हाईस्कूल और इंटर में फर्स्ट आई थी, मुझे सीना–पिरोना आता है, मुझमें भावनाओं की गहराई और एकाग्रता है, मैं अच्छी मित्र हूँ आदि सकारात्मक गुणों को अनु दिव्या की मदद से एक कागज़ पर लिखती है। यही से अनु का जीवन के प्रति देखने का दृष्टिकोण बदल जाता है। दिव्या अनु में विश्वास जगाती है एवं 'स्व ' के प्रति सचेत भी करती है। इस प्रकार दिव्या अनु को रोने बिखरने से रोकती है एवं उसे जिंदगी में कुछ करने की सलाह देती है। अनु दिव्या के रेस्तराँ में काम करती है ।

अनु कुछ दिन बाद जब मेडिकल की पूर्व परीक्षा देती है। पढाई कर डॉक्टर बनती है। एक अच्छी संस्था में काम करती है। वहीं दीपांकर नामक एक डॉक्टर से जान–पहचान होती है। दोनों एक–दूसरे को चाहते हैं और शादी के बंधन में बंधते हैं। दिव्या के माध्यम से उषा प्रियंवदा अनु में नारी चेतना को जागृत करती है। अन्याय–अत्याचारों का डटकर सामना करने को प्रेरित करती है। अनु कठिन परिस्थितियों का सामना कर, शिक्षा के लिए कर्ज लेकर डॉक्टर बनने में सफल होती है। पाश्चात्य संस्कृति में अनैतिक संबंध रखना सामान्य है किंतु अनु को यह

मान्य नहीं था। यहाँ अनु में सांस्कृतिक चेतना जागृत दिखाई देती है। अनु विदेश में रहकर भी भारतीय संस्कृति पर उसकी नितांत आस्था है। अनु विदेश में भी अपनी सांस्कृतिक मान–मर्यादा बरकरार रखती है।

अनु तलाक मिलने पर निराश तो होती है किंतु बिखरती नहीं। वह कठोर जीवन संघर्ष कर सफलता प्राप्त करती है। इस प्रकार 'शेष यात्रा ' उपन्यास में अनु पति के ठुकराने के बाद भी अपनी स्वतंत्र पहचान बनाने में सफल होती है। परित्यक्ता अनु संघर्ष कर अपने जीवन की शेष यात्रा को पूर्ण करती है।

2.4. अन्तर्वंशी

'अन्तर्वंशी ' उपन्यास आधुनिक जीवन शैली को प्रस्तुत करनेवाला है। साथ ही उपन्यास में पाश्चात्य संस्कृति का नारी पर प्रभाव एवं इस कारण उत्पन्न हो रही समस्याओं का चित्रण उषा प्रियंवदा ने कुशलता से किया है। उषा प्रियंवदा ने इस उपन्यास में नारी समस्या को स्पष्ट किया है। 'अन्तर्वंशी' उपन्यास की नायिका वाना एक मध्यमवर्गीय परिवार में जन्मी साधारण महिला है। जिसका विवाह विदेश में बसे शिवेश से होता है। उपन्यास के पूर्वाध में वाना एक समर्पणशील, पतिपरायण सभ्य भारतीय संस्कारों से सम्पन्न नारी के रूप में जीवन जीती है। उपन्यास के उत्तरार्ध में वह 'स्व' के प्रति अपने अस्तित्व बोध को जानते हुए क्रांतिकारी परिवर्तन का दर्शन कराती है। वाना, शिवेश उनके बच्चे आकाश एवं विकास ऐसा भरा पूरा परिवार है। वाना हर वक्त बच्चे और पति के कामों में व्यस्त रहती है। तब सारिका वाना को अस्तित्वबोध कराती है। सारिका वाना के घर में पेईंग गेस्ट है। सारिका के कारण वाना अपने अधिकारों को पाने के लिए जागृत होती है। वाना शिक्षा ग्रहण करती है। घर बेचनेवाली कंपनी में ऑफिस अभिकर्ता का काम करती है।

राहुल और शिवेश सहपाठी है। इसकारण वह शिवेश के घर आता–जाता रहता है। राहुल को जीवन में एक के बाद एक सफलता मिलती है। राहुल बचपन से मेधावी है। वहीं शिवेश आलसी, अकर्मण्य है। वह वाना और बच्चों के प्रति अपना उत्तरदायित्व नहीं निभाता। इस कारण वाना राहुल के प्रति आकर्षित होती है। दोनों में प्यार होता है। यह बात शिवेश को पता चलने पर शिवेश आत्महत्या करता है। उषा प्रियंवदा ने पति–पत्नी–प्रेमी (शिवेश–वाना–राहुल) ऐसा प्रेम का त्रिकोण उपन्यास में दर्शाया है।

उषा प्रियंवदा ने उपन्यास की नायिका वाना के माध्यम से सिद्ध किया है कि औरत किसी के पैर की जूती नहीं है कि जब चाहा पहन लिया जब चहा उतार दिया उसे भी पुरुष वृत्ति को सबक सिखाने का अधिकार है। चाहे वह उसका पति ही क्यों न हो। औरत की भी अपनी जिन्दगी होती है। उसके भी अपने स्वतंत्र विचार, स्वतंत्र भावनाएँ, इच्छाएँ, आकांक्षाएँ होती है वह भी दो पैर दो हाथ और एक ह्रदय का जीव है, उसकी भी भावनाएँ हैं, जैसे की पुरुषों की। इस आत्मसत्यता की पहचान करवाने में वाना पूर्णतः सिद्ध होती है किंतु यह सब करते हुए उसे बाहरी पीडा और संघर्ष का सामना करना पड़ता है। उसके सामने हमेशा नैतिक–अनैतिकता के प्रश्न उपस्थित होते रहते हैं।

नारी की आगे बढ़ने की लालसा में अपने परिवार के प्रति उदासीनता–सा बर्ताव करती है। भारतीय लोग विदेशों में बसे हुए हैं उनका चरित्र–चित्रण इस उपन्यास में हुआ है। वाना जैसी एक सुशील और भारतीय संस्कृति के अनुरूप बर्ताव करनेवाली नारी विदेशों में रहनेवाले लोगों की चमक–दमक की लालसा, गाड़ी बँगला, हिरे–जवारात के मोह में अपने फले–फुले परिवार को उजाड़ देती है। उषा प्रियंवदा का यह उपन्यास उन तमाम भारतीय परिवार की जीवनशैली का विश्लेषण करता है जो बेहतर अवसरों की तलाश में और आशा में प्रवासी हो जाते हैं। विदेश में बसे युवकों से मध्यमवर्गीय परिवारों की कन्याओं का विवाह सौभाग्य समझा जाता है और फिर शुरू होता है मोहभंग का अटूट सिलसिला। पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से नारी की प्रतिमा कैसे बदल रही है? यह इस उपन्यास में स्पष्ट हुआ है।

अतः कहा जा सकता है, 'अंतर्वंशी ' उपन्यास में पाश्चात्य जीवन शैली का भारतीय लोगों पर प्रभाव एवं उससे उपजी मोहभंग की स्थिति का चित्रण है।

2.5. भया कबीर उदास

'भया कबीर उदास ' इस उपन्यास की नायिका यमन स्तन कैंसर से ग्रस्त है। यमन शुरू से लेकर आखि.र तक इसी सवाल से जूझती है कि क्या सौंदर्य के प्रचलित मानदंड़ो और समाज की रूढ़ दृष्टि के अनुसार एक अधूरे शरीर को उन सब इच्छाओं को पालने का अधिकार है। जो स्वास्थ्य और संपूर्ण देहवाले व्यक्तियों के लिए स्वाभाविक होती है। उपन्यास की नायिका विदेशी भूमि पर अपना सहज

और अल्पाकांक्षी जीवन जी रही होती है कि अचानक उसे मालूम होता है कि उसे स्तन कैंसर है और यह बीमारी अन्ततः उसके शरीर से उसके सबसे प्रिय अंग को छीन ले जानेवाली है। लेकिन तमाम चोटों के बावजूद मन कब अधूरा होता है, वह फिर–फिर पूरा होकर मनुष्य से, जीवन से अपना हिस्सा, अपना सुख माँगता है। उपन्यास में नायिका की पीड़ा मानव मन की चिरन्तन लालासाओं, निराशाओं और उदासियों कामनाओं का अत्यंत कुशल अंकन उषा प्रियंवदा ने किया है।

'भया कबीर उदास ' की नायिका यमन की शिक्षा दिल्ली शहर में हुई है। दिल्ली विश्वविद्यालय में यमन के पिताजी उपकुलपति थे। यमन के पिताजी काफी कुशाग्र बुद्धिवाले व्यक्ति थे। यमन न्यूयार्क में 'बफेलो ' नामक शहर में रहती थी। वह विश्वविद्यालय में पीएच्.डी के साथ–साथ अध्यापिका का काम करती थी। उसे जल्द से जल्द पीएच्.डी पूर्ण करनी थी। तभी एक दिन अचानक यमन को अपने स्तन में कुछ गाठ.ों का अहसास होता है। वह गाठे. वेदना रहित है। इसलिए वह अस्पताल में नॉर्मल चेकअप के लिए जाती है। अस्पताल में डॉ. जैकरी यमन का चेकअप करते हैं एवं डॉ. जैकरी ऑन द सेफ साइड बायौप्सी कराने की सलाह देते हैं। डॉ. अंजेला एवं डॉ. हैदर यमन के स्तन का छोट.ासा टुकड़ा निकालकर बडे. पॅथोलॉजी में चेकअप के लिए भेजते हैं। जाँच के बाद पता चलता है यमन को कैंसर है। यमन सोच में पड़ती है क्योंकि यमन को कैंसर की गम्भीरता का अहसास था। वह सोचती है, "युद्ध कैंसर से महायुद्ध। वह अक्सर सोचती है कि इस रोग के संदर्भ में युद्ध का रूपक क्यों प्रयोग किया जाता है? शायद इसलिए कि कुछ कोषाणु अपने शरीर में आंतकवादियों की तरह आततायी बन जाते हैं और स्वयं इसी को ही नष्ट करने लगते हैं। तभी उनसे संघर्ष में तरह–तरह के अस्त्र प्रयोग किए जाते हैं, रुग्ण के अंग को काट.कर निकाल दो जहर से शरीर को भर दो जिससे कैंसर अणु नष्ट हो जाएँ, फिर भयंकर एक्स रे किरणों से उस भाग को ही दग्ध कर दो। "[17]

डॉ. जैकरी यमन को ऑपरेशन की सलाह देते हैं। इस ऑपरेशन में यमन का सबसे प्रिय अंग छिन जायेगा। इस बात का यमन को दु:ख है। इस कारण यमन अपने पूरे रूप से शारीरिक सुख को उपभोगना चाहती है। शेषेन्द्र जो यमन के छात्र के पिता है। उनके साथ देह सुख वह उपभोगती है लेकिन उसे ड़र था कि शेषेन्द्र के कोमल हाथ उसके वक्ष की गँठो को न छू जाएँ। कैंसर के कारण ही शेषेंद्र और

उनकी पत्नी में विवाह विच्छेद हुआ था। जब शेषेंद्ग की पत्नी को चार–पाँच साल पहले कैंसर हो गया था तब शेषेंद्ग ने पत्नी को आत्मिक भाव नहीं दिया क्योंकि वह अपनी या किसी और की बीमारी देख नहीं सकता, अस्पताल की गंध से वह दूर भागता है। यह सुनकर यमन को अंदर ही अंदर दुःख होता है। जब शेषेंद्ग उसे पास लेता है तो वह कहती है, "नहीं सब कुछ ऐसे ही रहने दो शेषेंद्ग। हम दोनों देश के दो छोरों पर दो अलग–अलग सागरों के तट पर रहते रहेंगे मैं यहाँ, अटलांटिक के पास तुम उधर प्रशान्त महासागर की और "[18] शेषेंद्ग को यमन कैंसर के बारें में नहीं बताती। न चाहते हुए भी रोग मुक्ति के लिए उसे ऑपरेशन करना पडा। ऑपरेशन सफल होता है। कुछ दिनों बाद यमन को पता चलता है कि शेषेंद्र से शारीरिक संबंध के बाद वह प्रेग्नेंट है। वह डॉक्टर की सलाह लेती है। तीन माह का गर्भ है किंतु कैंसर की कीमोथेरेपी से शिशु को नुकसान पहुँचा है। डॉक्टर गर्भपात की सलाह देते हैं। यमन गर्भपात के बाद घर जाती है। यमन को यह बात पता थी कि कैंसर के बाद पति खिलौने की तरह पत्नी को फेंक देते हैं।

यमन को अपने प्रिय अंग के खोने से दुःख है। यमन सोचती है, पुरुषों को भी तो वक्ष कैंसर होता है। उनका भी यही सब प्रोटोकॉल होता होगा पर उन्हें कहीं से मास निकालकर कुछ गढ़ना नहीं पडता हो, बस छोटी–सी निपल और उसके चारों और काले रंग का गुदाना। यमन कैंसर के कारण वक्ष को खोकर अपने आप में कमी पाती है। अपने सौंदर्य में कमी पाती है। लेकिन कुछ दिनों में वनमाली का साथ पाकर यमन जीने के लिए प्रेरित होती है। यमन कैंसर के कारण अपने आपको खेद भरी एक कमजोर स्त्री समझती है। लेकिन वनमाली उसमें आत्मविश्वास जागृत करता है। वनमाली यमन का बचपन का साथी है। वनमाली के बड़े–बड़े बंगले हैं साथ ही नर्सरी में पेड पौंधे हैं। विदेश में विविध संगोष्ठी में वह सहभागी होता है। यमन वनमाली के प्रति आकर्षित है, वनमाली भी यमन से प्यार करता है। जब वनमाली यमन के आगे विवाह का प्रस्ताव रखता है। तब यमन कहती है, मुझे कैंसर है तब वनमाली कहता है, मैं तुमसे प्यार करता हूँ यमन, प्यार करता हूँ। यमन को वनमाली पत्नी रूप में स्वीकार करता है। इस प्रकार वनमाली कैंसर पीड़ित यमन को सहारा देता है। तब यमन को रविन्द्गनाथ की वे पंक्तियाँ याद आती है, प्रभु मैं ऐसे नत और प्रस्तुत रहूँ और तुम मेरी अंजुलि बार–बार भरते रहना।

इस उपन्यास में उषा प्रियंवदा ने एक कैंसरग्रस्त नारी को कैसे समाज में विविध समस्याओं का सामना करना पड.ता है। पुरुष उसकी परिस्थिति न समझते हुए उसे कैसे खिलौने की तरह फेंक देता है। कैंसर की उपचार पद्धति इतनी दु:खद होती है कि तब उनको एक सहारे की जरूरत होती है लेकिन कोई सहारा उसे नहीं मिलता। फिर भी यमन हार नहीं मानती कैंसर की बीमारी से मुकाबला करती है और अंत में बीमारी से मुक्त होकर सामान्य जीवन यापन करती है। कैंसर की बीमारी के कारण समाज में अनेक महिला अपने जीवन को समाप्त करती है। उन कैंसरग्रस्त महिलाओं के सामने यमन एक मिसाल है। इस प्रकार उपन्यास में एक कैंसरग्रस्त नारी की व्यथा को प्रस्तुत किया है।

1.3 कहानी साहित्य

उषा प्रियंवदा आज हिंदी के संवेदनशील कथाकरों में महत्वपूर्ण हस्ताक्षर है। आज़ादी के बाद के भारत के बदले हुए मानसिक और सामाजिक परिवेश को हम उषा प्रियंवदा की कहानियों में देख और महसूस कर सकते हैं। समाज मे घटि.त घट.नाओं को लेकर वह अपना साहित्य लिखती है। 'संपूर्ण कहानियाँ ' इस किताब के फ्लैप पर लिखा है, "उषा प्रियंवदा की कहानियाँ जीवन के सहज विडम्बनबोध की कहानियाँ हैं। घने कुहासे की तरह त्रास जब पाठ.क को अपने आगोश में लेता है तो सुध–बुध खोता पाठ.क खुद को छोड़ देता है, उसकी धीमी लय पर डूबते –उतराने को। और जब कहानी समाप्त होती है तो पाठ.क खुद को एक सन्नाटे में पाता है–जहाँ दुनिया–जहान की तल्ख सच्चाइयाँ उसे कुरेद रही होती है। वह प्रश्नाकुल व बैचैन हो उठता है कि आखिर ऐसा क्यों है– यह दुनिया ऐसी क्यों है! "[19] उनकी कहानियों में नारी में आधुनिक काल में जो बदलाव हुआ एवं नारी उस बदलाव में कैसे नये मूल्य अपना रही है। कैसे स्त्री अब पुरानी परंपरा को अस्वीकार कर अपनी नई छवि तराश रही है। आदि मुख्य बातें उषा प्रियंवदा की कहानियों में है।

उषा प्रियंवदा की ज्यादातर कहानियाँ विदेशी परिवेश पर लिखी है, मध्यमवर्गीय परिवारों पर लिखी है, पति –पत्नी के संबंध पर लिखी है। वैसे उनकी कहानियों में पारिवारिक संबंधों में आए बदलाव, पाश्चात्य एवं भारतीय संस्कृति में टकराव, स्त्री–पुरुष संबंधों में आए बदलाव आदि विशेष समस्याएँ हैं। स्त्री–पुरुष नैतिक–अनैतिक संबंध, नारी के आधुनिक रूप में माँ, बेटी, बहन, पत्नी, सास, वैसे ही विवाहेत्तर संबंध, अकेलापन, अजनबीपन, उदासी, खोखलापन, ईर्ष्या, दायित्व बोध, निरर्थकता, निसरता, पीडा, कुंठा, अपराध बोध, रिश्तों में आती दरारे, हीनता ग्रंथी, अस्तित्व बोध, घुटन आदि विविध समस्याओं का अंकन किया है। अपने लेखन के बारे में स्वयं उषा प्रियंवदा लिखती है, "मैं वहीं लिखती हूँ जिससे मैं परिचित हूँ – यानी भारत और विदेश का परिवेश। मेरे चारों और की घटनाएँ, लोग, उनके जीवन की उलझनें और समस्याएँ हर समय मेरी सृजनता को प्रभावित करती रहती है। उन सबके संमिश्रण से पात्र एक आकार लेकर मानस को ऐसा जकड. लेते हैं कि उन्हें नाम, मानव प्रवृत्तियाँ देकर, विभिन्न घटनाओं को पिरोकर एक कहानी अपने आप बन जाती है बस, उसे लिखने का काम मेरा होता है। "[20] उनकी कहानियों में

आधुनिकता बोध के साथ–साथ पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव के कारण हिंदी साहित्य में पहली बार इतने खुले सेक्स का वर्णन दिखाई देता है। उषा प्रियंवदा ने वर्तमान समय में नर–नारी संबंधों में आये बदलाव को रेखांकित किया है। उनके अनेक पात्रों पर उपर से पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव है लेकिन अंदर से भारतीय संस्कार का प्रभाव ज्यादा है।

टूटते मानवीय मूल्यों का यथार्थ चित्रण उषा प्रियंवदा ने अपनी कथाओं में किया है। कैसे अर्थ के कारण मानव अपनत्व भूलता जा रहा है। अपनों के प्रति कर्तव्य भाव को वह भूलता जा रहा है। केवल भौतिक सुविधाओं के पीछे भाग रहा है। उनकी 'वापसी ' यह कहानी सुप्रसिद्ध है। अर्थ के कारण आज मनुष्य खून के रिश्तों को भूल गया है। आदि विशेषताएँ उनकी कहानियों में देखने को मिलती है। 'बनवास ' (2009) उषा प्रियंवदा के समग्र लेखन में से 13 श्रेष्ठ कहानियों का संग्रह है। उनकी कहानियाँ मानवीय संवेदनाओं और सरोकारों का प्रतिनिधित्व करने वाली है, साथ ही साथ यह उनकी कहानी–कला के विकास का अनूठा दस्तावेज है। सारांशतः व्यक्ति और परिवार के विघटित संबंध, स्त्री पुरुष के बदलते संबंध, मानवीय मूल्यों का टूटना, बदली हुई परिस्थिति में नारी रुप आदि प्रमुखता से मुखर होते हैं। उषा प्रियंवदा की कहानियों में आधुनिक नारी जो आर्थिक दृष्टि से पुरुष पर निर्भर नहीं है। वह बदले हुए परिवेश का प्रतिनिधित्व करती है। उनकी कहानियाँ समाज के ज्वलंत प्रश्नों को उज़ागर करती है।

1.3.1 फिर वसंत आया (सरिता प्रेस, सन् 1961)

प्रस्तुत कहानी संकलन में कुल तेरह कहानियाँ हैं। प्रस्तुत कहानी संकलन में मेनकाः रम्भा : उर्वशी, दोस्त, आश्रिता, मान और हठ, नष्ट नीड., पूर्ति, नई, कौंपल, तूफ़ान के बाद, मुक्ता और शशि, अकेली राह, बिखरे तिनके , फिर वसंत आया आदि कहानियों का समावेश है।

मेनका : रम्भा : उर्वशी : इस कहानी में चाची अपने तीनों लड़को के लिए मेनका, रम्भा, उर्वशी जैसी सुंदर बहुएँ ढूँढती है। दो को सुंदर युवतियाँ मिल जाती है किंतु तीसरे लड़के के लिए चाची को अपनी ममता की खातिर दिखने में कुरूप कुसुम नामक युवती से विवाह कराती है। दोस्त : इस कहानी में अजय हर वक्त दोस्तों के कार्यो में उलझा रहता है। पत्नी को वक्त नहीं दे पाता इस कारण पत्नी हमेशा

अजय से नाराज़ रहती है किंतु जब अजय की बहन दिपा की शादी के पाँच दिन पहले अजय सीढ़ीओं से गिर कर उसकी पैर की हड्डी टूट. जाती है तब अजय के दोस्त ही दिपा की शादी को निभाते हैं। तब अजय की पत्नी सुरेखा की आँखे खुलती है। आश्रिता : इस कहानी में शेखर अपनी बुआ के घर अपनी पढ़ाई पूरी करने के लिए रहता है। बुआ के घर में मधु नामक युवती आश्रिता है। घर के सब काम वह करती है। फिर भी बुआ उसे बात–बात पर डाँटती रहती है किंतु शेखर उसकी प्रशंसा करता है। मधु से शादी करना चाहता है, किंतु बुआ को यह रिश्ता पसंद नहीं है। कहानी में आश्रिता मधु के प्रति बुआ का भावनाशून्य बर्ताव दिखाई देता है। मान और हठ : इस कहानी में अमृता शादी के बाद अपने पति मुकुल की कुरूपता एवं पैसे के घमंड के कारण उसे ठुकराती है। दोनों में संवादों की कमी है लेकिन आठ वर्ष बाद पुनः दोनों जब जीवन में अकेले हो जाते हैं तो पुनः एक–दूसरे का स्वीकार करते हैं। आपसी संवादों की कमी के कारण टूट.ते पति–पत्नी संबंध एवं एक–दूसरे को न समझ पाने के कारण संबंधों में दरार पड.ती हुई दिखाई देती है। नष्ट नीड. : इस कहानी में एक पक्ष में लाखी जो घर की नौकरानी है अपने मनचाहे नौकर महाराज से शादी कर भाग जाती है। दूसरे पक्ष में घर मालिक भुवन से सुधीरा प्यार करती है किंतु भुवन शादी से इन्कार कर देता है और बाद में पछतावा करता है। पूर्ति : इस कहानी में तारा जो अध्यापिका है। तारा दिखने में करूप होने के कारण उसका विवाह नहीं होता इस कारण वह अपने जीवन में अकेलापन महसूस करती है। नई कौंपल : कहानी में कांता यह घर की बहू है। इस कारण उसे सास, पति सुबोध, ननद बिन्नु, ससुर आदि सभी एक के बाद एक काम करने पडते हैं। कांता चुप–चाप रोती है किंतु उनका विरोध नहीं करती। कांता अन्याय अत्याचार चुपचाप सहती हुई दिखाई देती है। तुफान के बाद : कहानी में कैसे आज भी युवतियों पर शादी के लिए युवक थोपे जाते हैं उनकी इच्छा को कोई पूछता तक नहीं लेकिन शादी के बाद युवती का भाई पछतावा करता है। मुक्ता और शशिः इस कहानी में भी युवतियों को विवाह के लिए सज़ा–धज़ाकर प्रस्तुत किया जाता है। लेकिन मुक्ता अपने मनपसंद युवक से ही शादी करती है। अकेली राह : इस कहानी में गौरी पढी–लिखी होने के कारण अपने मनपसंद युवक से शादी करना चाहती है, लेकिन घरवाले परंपरा से जकडे. हैं जो अंतरजातीय विवाह को स्वीकृति नहीं देते। बिखरे तिनकेः इस कहानी में विवाह

के पहले शारीरिक संबंध और उसकी परिणति आपत्य में होती है। यही अनैतिक संबंध समाज नहीं स्वीकारता। मणि को इस कारण गाँववाले मकान खाली करवाते हैं। फिर वसंत आयाः कहानी में छाया अपने भाई के दोस्त विनायक से प्यार करती हैं किंतु विनायक को उसकी बहन मीना एवं पिताजी की इज्जत खातिर दूसरी जगह शादी करनी पड़ती है। लेकिन आठ साल बाद पुनः इनका मिलन होता है।

1.3.2 जिंदगी और गुलाब के फूल (ज्ञानपीठ प्रकाशन, सन् 1961)

प्रस्तुत कहानी संकलन में कुल बारह कहानियाँ हैं। प्रस्तुत कहानी संकलन में पैरेम्बुलेटर, मोहबन्ध, जाले, छुट्टी का दिन, कच्चे धागे, कँटीली छाँह, दो अँधेरे, चाँद चलता रहा, दृष्टि दोष, वापसी आदि कहानियों का समावेश है। पैरेम्बुलेटर : कहानी में आर्थिक विपन्नता के कारण कालिन्दी को अपने बच्चे के उपचार के लिए पैरेम्बुलेटर तक बैचना पड़ता है। कहानी में मध्यमवर्गीय परिवारों की आर्थिक विषमता का बड़ा मार्मिक चित्रण उषा प्रियंवदा ने किया है। मोहबन्ध : कहानी में राजन और नीलू पति–पत्नी है लेकिन नीलू के आपसी स्वार्थ, स्वैर आचारण के कारण राजन जीवन में अकेला और उदास अनुभव करता है। कहानी में आधुनिक जीवन में पति–पत्नी के संबंधों में पड़ती दरारों का चित्रण हुआ है। जाले : कहानी में भी दाम्पत्य जीवन में पत्नी अपने आपासी स्वार्थ, अहंकार एवं स्वतंत्र, समता का दावा करती है। कुछ ही दिनों बाद ही उनका विवाह विच्छेद होता है। छुट्टी का दिन : कहानी में विवाह सात जन्म का रिश्ता होता है किंतु आधुनिक जीवन में एक साल भी विवाह निभतें नहीं। विवाह होकर भी पति–पत्नी अपने आपको अकेला महसूस करते हैं। विवाह एक सामाजिक संस्कार का पतन होता हुआ कहानी में दिखाई देता है। कच्चे धागे : कहानी में मानवीय जीवन के क्षणिक संबंध प्रस्तुत है। पड़ोसी जीजी कुंतक से हर काम बहला फुसलाकर करावा लेती है। कुंतक के हर काम की प्रशंसा करती है किंतु जब जीजी के भाई सिद्धार्थ से कुंतक की शादी की बात की जाती है तो जीजी मना करती है। कँटीली छाँह : कहानी में मास्टर साहब है जो जीवन के अकेलेपन को दूर करने हेतु शादी करते है किंतु पत्नी के शुष्कता भरे बर्ताव के कारण पुनः मास्टर साहब अकेलेपन में जीवन बिताते हैं। उनके जीवन में पत्नी कुछ समय के लिए कँटीली छाँह बनकर आती है और चली जाती है। दो अँधेरे : कहानी में कौशल्या और सुमित्रा दो बहनें हैं। कौशल्या का विवाह हो चुका है। कौशल्या के पति दिनेश पुनम नामक युवती के साथ विवाहबाह्य

संबंध रखता है। यह बात कौशल्या को पता चलती है किंतु दिनेश के माँफी माँगने से कौशल्या उसे माँफ करती है। कहानी के दूसरे पक्ष में सुमित्रा का विवाह नहीं हुआ है। वह नौकरी करती है। वह शंकर नामक युवक से प्यार करती है किंतु सुमित्रा के शादी का प्रस्ताव शंकर ठुकराता है। अतः दो बहनें अँधरे के समान जीवन व्यतीत करने के लिए मजबूर है। चाँद चलता रहा : कहानी में रोहिनी विवाह पूर्व कई मित्रों के साथ शारीरिक संबंध रखती है। वह सब मर्यादाओं भूलकर बदनामी से नहीं डरती। विवाहपूर्व संबंधों के कारण कैसे नैतिक मूल्यों का र्हास हो रहा है इस पर कहानी के माध्यम से प्रकाश डाला है। दृष्टि दोष : कहानी में उच्चशिक्षित युवक साम्बा अधिकारी है। उसका परिवार गाँव में रहता है लेकिन उसकी शादी उच्चशिक्षित पत्नी चन्दा के साथ होती है। उसका परिवार शहर में रहने के कारण उच्चशिक्षित है। दोनों परिवारों में जीवन स्तर को लेकर भेद–भाव होता है। वापसी : यह कहानी उषा प्रियंवदा की सबसे चर्चित एवं प्रसिद्ध है। वापसी में गजाधर बाबू जो सारी जिंदगी परिवार की खातिर दूर दराज में अकेले नौकरी करते हैं किंतु जब वह रिटायर होने के बाद परिवार में वापस आते हैं तो परिवार के सभी सदस्य बेटी, बेटा, बहू यहाँ तक की पत्नी भी उनके साथ भावनाशून्य बर्ताव करती है। कहानी में आज आधुनिक युग के परिवारों में अपनेपन का अभाव दिखाई देता है।

1.3.3 एक कोई दूसरा (अक्षर प्रकाशन, सन् 1966)

प्रस्तुत कहानी संकलन में कुल सात कहानियाँ हैं। प्रस्तुत कहानी संकलन में एक कोई दूसरा, झूठा दर्पण, कोई नहीं, सागर पार का संगीत, पिघलती हुई बर्फ, चाँदनी में बर्फ पर, टूटे. हुए आदि कहानियों का समावेश है। एक कोई दूसरा : कहानी में रानी अपने से बडे. और विवाहित शिक्षक डॉ. कुमार के प्रति आकर्षित होकर विजय का रिश्ता ठुकरा देती है। कहानी में विवाहपूर्व संबंध रखने से न हिचकिचाती नारी के रूप में हमें रानी दिखाई देती है। झूठा दर्पण : कहानी में अमृता चाहती है यति को किंतु शादी करती है कुँवर के साथ। इस कहानी में नैतिक मूल्यों का विघट.न होता हुआ दिखाई देता है। कोई नहीं : कहानी में अक्षय चाहता है नमिता को किंतु शादी करना चाहता है ऑस्ट्रीलियन युवती से लेकिन व्हिजा, आदि अनेक नियमों के कारण वह शादी नहीं कर पाता बाद में भारत में जनरल की बेटी से शादी करता है। जो पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित है। कहानी में संवेदनशून्यता दिखाई देती है।

सागर पार का संगीत : कहानी में विवाहपूर्व संबंधों के कारण नैतिक मूल्यों का विघट.न किस प्रकार होता है यह दर्शाया गया है। पिघलती हुई बर्फ : कहानी में विवाह के बाद भी पूर्व प्रेमिका के साथ शारीरिक संबंध रखें जाते हैं. यह दिखाया गया है। चाँदनी में बर्फ पर : कहानी प्रेम के नये प्रतिमान प्रस्तुत करती है। हेमा की विदेशी पत्नी पाश्चात्य संस्कारों के प्रभाव के कारण 'मेरी मेलकिन ' इस नये दोस्त के साथ भाग जाती है। टूटे हुए : कहानी में मानवीय त्याग का चित्रण हुआ है। साथ–साथ सौंदर्यात्मक मूल्यों का विघट.न भी चित्रित हुआ है।

1.3.4 कितना बड़ा झूठ (राजकमल प्रकाशन, सन् 1966)

प्रस्तुत कहानी संकलन में कुल आठ कहानियाँ हैं। प्रस्तुत कहानी संकलन में संबंध, प्रतिध्वनियाँ, कितना बड.ा झूठ, ट्रीप, नींद, सुरंग, स्वीकृति, मछलियाँ आदि कहानियों का समावेश है। संबंध : कहानी में नायिका पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण अविवाहित रह जाती है। अपने स्वयं का जीवन उसे पीड़ा भरा लगता है। कहानी में जीवन के भटकन और अशान्ति का बोध उज़ागर होता है। प्रतिध्वनियाँ : इस कहानी में वसू अपना भरा–पूरा संसार छोड.कर अन्य पुरुष डॉ. जूलियान के साथ रहती है। कहानी में नारी अपने पूराने जीवन में उतरना बेहतर समझती है। कितना बड़ा झूठ : दो पुरुष एवं दो नारियाँ जिन्होंने नये प्रेम के स्वरूप को उलझया और सुलझाया भी है। कहानी में नायिका केवल शारीरिक सुख चाहती है, परिवार की वह चिंता नहीं करती। कहानी में बदलते नर–नारी संबंधों का चित्रण हुआ है।

ट्रीप : कहानी में 'स्टीफन ' अपनी पत्नी के अनैतिक संबंध स्वीकृत करता है, किंतु इससे होनेवाले बच्चों की जिम्मेदारी वह नहीं लेना चाहता। पति–पत्नी संबंधों में आ रहे बदलावों को कहानी में प्रस्तुत किया है। नींद : कहानी की नायिका हमेशा तीसरे व्यक्ति की खोज में रहती है उसे केवल काम तृप्ति चाहिए। वह तीसरे आदमी की खोज में कई पुरुषों से संबंध रखती है। सुरंग : इस कहानी में माँ पर बेटे. के मृत्यु का गहरा सदमा होता है। इस कारण वह अपनी दो लड.कियों पर भी ध्यान नहीं देती। दुःख भूलाने के लिए भास्कर नामक व्यक्ति से अनैतिक संबंध रखती है। स्वीकृति : इस कहानी में जपा पति सत्य से दूर चली जाती है। वाल नामक विदेशी के साथ संबंध रखती है। नारी जीवन के खालीपन एवं अकेलेपन को भी उषा

प्रियंवदा ने रेखांकित किया है। मछलियाँ : विजी विवाहपूर्व ही माँ बन जाती है। कहानी में संबंधों के तनाव के साथ–साथ अनुभूतियों की जटि.लता भी है।

1.3.5 शून्य तथा अन्य रचनाएँ (राजकमल प्रकाशन, सन् 1996)

प्रस्तुत कहानी संकलन में कुल चार कहानियाँ हैं। प्रस्तुत कहानी संकलन में पुनरावृत्ति, प्रसंग, शून्य, आधा शहर आदि कहानियों का समावेश है। पुनरावृत्ति : चिरंतन विवाहबाह्य कई स्त्रियाँओं के साथ संबंध रखता है इस कारण उसकी पत्नी पागल हो जाती है। कुछ वर्षों बाद वह ठीक होती है। तब चिरंतन पत्नी से एकनिष्ठ रहने की शपथ लेता है किंतु कुछ दिनों बाद वह सैली के साथ संबंध रखना चाहता है। फिर से पुनरावृत्ति करना चाहता है। इस कहानी में अनैतिक संबंधों के कारण पति –पत्नी रिश्ते में दरार पड.ती दिखाई देती है। प्रसंग : इस कहानी में ममता राघव से प्यार करती है किंतु राघव से शादी न होने के कारण वह विदेश में डॉक्टरी पढ़ने चली जाती है। बाद में भारत लौट.ने पर बुआ उसका विवाह एक बड़े उम्रवाले विधुर आदमी से कर देती है पहली रात जब ममता राघव के साथ सोती है तो उसे लगता है किसी अजनबी के साथ सोयी है। सबसे ज्यादा दुःख राघव के मृत्यु के बाद ममता को होता है।शून्य : कहानी में उषा प्रियंवदा ने विदेश में पीएच्. डी करने गये छात्रों की कठिनाइयों पर प्रकाश डाला है। उन्हें कितनी समस्याएँ आती है। 'नौकरी भी करो और पढाई भी करो।' यह संदेश देने का काम कहानी करती है। आधा शहर : कहानी की नायिका कई पुरुषों से शारीरिक संबंध रखती है उसका मानना है यदि पुरुष कई महिलाओं के साथ संबंध रखता है। तो स्त्री क्यों नहीं अनेक पुरुषों के साथ संबंध रख सकती है। नायिका स्वछंद स्वभाव से जीवनयापन करती है।

सारांशतः कहा जा सकता है कि उषा प्रियंवदा का हिंदी कहानी साहित्य में बहुत बड़ा योगदान है। उनकी कहानियाँ समाज के ज्वलंत प्रश्नों को उज़ागर करती है। बाज़ारवाद के इस दौर में सबसे ज्यादा प्रहार यदि किसी चीज पर हुआ है तो वह मूल्य व्यवस्था है। भौतिक सुख–सुविधाओं के कारण मनुष्य–मनुष्य की ओर मनुष्यता की दृष्टि से न देखकर उसे एक वस्तु के रूप में देख रहा है। परिणाम स्वरूप उसके भीतर के मानवीय मूल्यों का दिन–ब–दिन ह्रास होता हुआ दिखाई दे रहा है। आदि विशेष विशेषताएँ उषा प्रियंवदा की कहानियों की है।

अन्य प्रकाशित पुस्तकें :– उषा प्रियंवदा ने भारतीय साहित्य, लोककथा एवं मध्यकालीन भक्ति काव्य पर अनेक लेख, जो अंग्रेजी में समय–समय पर प्रकाशित हुए। मीराबाई और सूरदास के पदों का अंग्रेजी अनुवाद साहित्य अकादमी, नई दिल्ली द्वारा पुस्तक रूप में प्रकाशित किया। उन्होंने आधुनिक हिन्दी कहानियों के भी अनुवाद किए। इस प्रकार उषा प्रियंवदा ने अपने लेखन से हिंदी साहित्य को एक दिशा देने का काम किया है।

पात्र–चरित्र चित्रण

1.अम्मा

'पचपन खंभे लाल दीवारें ' उपन्यास में अम्मा सुषमा की विमाता के रूप में है। अम्मा अपने छोटे. बच्चे निरुपमा, प्रतिमा, विनय, संजय इनके साथ आत्मीयता का बर्ताव करती है। अपनी बडी बेटी के साथ बेरूखी भरा व्यवहार करती है। अपनी बडी बेटी को पैसा कमाने का साधन मात्र समझती है। सुषमा अम्मा के बारे में कहती है, "माँ ने मुझे सहारा नहीं दिया, ढ.ाढ.स नहीं बंधाया। हर बार जब वह अपना कोई आभूषण बेचने को निकलती तो मुझे ऐसी दृष्टि से देखती जैसे उन सब मुसीबतों के लिए उत्तरदायी मैं थी। "[21] अम्मा अपनी छोटी बेटी निरु की विवाह की चिंता करती है। सुषमा के बारे कृष्णा मौसी से कहती है, "तुम जानो कृष्णा सुषमा की शादी तो अब हमारे बस की बात नहीं रही। इतना पढ़–लिख गई अच्छी नौकरी है और अब तो क्या कहते हैं, होस्टल में वार्डन भी बनने वाली है। बंगला और चपरासी अलग से मिलेगा बताओ, इसके जोड़ का लड़का मिलना तो मुश्किल ही है। " [22] अम्मा नितांत स्वार्थी एवं संकुचित वृत्तिवाली है। नहीं चाहती की सुषमा का अलग संसार हो वह जो भी कमाएँ परिवारवालों को ही दे। उपन्यास में अम्मा अपने कर्तव्य से विमुख होकर अपनी बेटी का विवाह न हो ऐसा मन–ही–मन में चाहती है। अम्मा का व्यवहार हमें चौंका देता है। अम्मा का स्वार्थ इतना बढ़ जाता है कि जिसे देखकर पाठ.को को भी दुःख होने लगता है। लेकिन सुषमा खुद मानती है कि अम्मा को जिंदगी ने चूस लिया है। अतः माँ की अत्यंत स्वार्थी प्रतिमा में अम्मा दिखाई देती है।

2.सुषमा (बेटी)

'पचपन खंभे लाल दीवारें ' इस उपन्यास में सुषमा परिवार में सबसे बड़ी बेटी है। परिवार में पक्षाघात से पीडि.त पिता, माँ, दो छोटे भाई, दो बहने हैं। परिवार में सुषमा बडी बेटी होने के कारण पूरे परिवार की जिम्मेदारी सुषमा पर आ जाती है। सुषमा परिवार का भरण–पोषण करनेवाली एवं शोषित पुत्री के रूप में है। सुषमा

नौकरी कर परिवार की जिम्मेदारी का निर्वाह करती है। स्वयं के माँ–बाप नहीं चाहते की सुषमा का विवाह हो क्योंकि सुषमा कमाऊ है। आर्थिक संपन्नता देने वाली गाय है। सुषमा के माँ–बाप स्वयं की पुत्री के विवाह के बारे में पलायनवादी दृष्टि रखते हैं। वह नितांत स्वार्थी एवं अमानवीय वृत्ति के है। वह मन–ही–मन में चाहते हैं कि सुषमा शादी न करें। तब कृष्णा मौसी सुषमा के विवाह की जिम्मेदारी का अहसास कराती है।

सुषमा पढ.–लिखकर आत्मनिर्भर होती है किंतु परिवार के कारण उसे अपने मनपसंद प्रेमी नील को भी ठुकराना पड.ता है। इस संदर्भ में डॉ. वंदना मोहिते लिखती है, "सुषमा एक ऐसी नारी है कि जिसे परिवार के लिए अपने पूरे जीवन की होली जलानी पड़ती है। माँ–बाप दोनों ही उस पर निर्भर रहते हैं। इस सीमा तक कि दूसरे संतानों की शिक्षा या शादी का विचार भी उसके आधार पर करते हैं। "[23] सुषमा एक पढ़ी–लिखी नारी होकर भी परिवार में उसका भावनात्मक स्तर पर शोषण होता है। अतः सुषमा निस्वार्थी बेटी के रुप में है। सुषमा अपने परिवार के प्रति समर्पित पुत्री के रुप में दिखाई देती है।

3.सुषमा (बहन)

'पचपन खंभे लाल दीवारें ' उपन्यास में सुषमा ऐसी बहन के रूप में है जो निस्वार्थी एवं नौकरी कर अपने से छोटे भाई बहन एवं परिवार का भरण–पोषण करती है। सुषमा, परिवार के लिए स्वयं के जीवन की होली करके दूसरों का जीवन प्रकाशमय करती है। सुषमा अपनी छोटी बहन की शादी के लिए कर्ज लेती है। परिवार के लिए अपने प्रेमी नील को ठुकरा देती है। कृष्णा मौसी सुषमा के बारे में कहती है, "सुषमा ने तो भाई–बहनों के कारण अपने को मिटा दिया। "[24] अपने व्यस्त कार्य से समय निकालकर छोटे. भाई के लिए स्वेटर बुनती है। छोटी बहन को डॉक्टर बनाने की इच्छा रखती है। छोटी बहन को सलाह देती है, "अम्मा की बात न सुना कर। अभी एक साल और है। फिर जहाँ कहेगी, वहाँ पढ़ने का इंतजाम हो जाएगा। "[25] छोटी बहन को शिक्षा के लिए प्रेरित करती है। सुषमा बहन होकर माँ–बाप का कर्तव्य निभाती है। सुषमा ने जो जिंदगी में दुःख एवं यातनाएँ सही है वह अपने छोटे. भाई–बहनों को नहीं देना चाहती है। सुषमा के बारे में डॉ. वंदना मोहिते

लिखती है, "सुषमा प्रगतिवादी विचारोंवाली बहन के रूप है। परिवार में बडे. भाई के समान सारा कार्य करती है। अतः वह बहुत ही उदार और दयालु बहन का रूप है। "[26] अतः कहा जा सकता है कि आधुनिक काल में नारी अब घर परिवार की जिम्मेदारी बडी अच्छी तरह सँभाल सकती है। सुषमा प्रगतिशील बहन के रूप में उपन्यास मे चित्रित है।

3.1.5.1 मीनाक्षी

'पचपन खंभे लाल दीवारें ' इस उपन्यास में मीनाक्षी सुषमा के साथ सह–अध्यापिका है। मीनाक्षी हर वक्त उपन्यास पढ़ती रहती थी। मीनाक्षी सुषमा की सबसे करीबी दोस्त है। सुषमा की हर बात की ख.बर मीनाक्षी को रहती है। हर वक्त मीनाक्षी सुषमा को उलझनों से छुट.कारा दिलाती है। जब सह–अध्यापिका सुषमा पर अनैतिक आचरण का आरोप लगाती है तब सुषमा हताश हो जाती। तब मीनाक्षी कहती है, "दुनिया की यही रीति है सुषमा, दूसरों के फटे. में पैर अडाना सबको अच्छा लगता है और हम बहुत प्रबुद्ध और प्रगतिशील महिलाएँ बनने का दम भरती है। "[27] सुषमा को नील के प्यार में अपनी जिम्मेदारी का अहसास कराती है तब मीनाक्षी कहती है, "तुम अपना उत्तरदायित्व समझने की चेष्टा करों तुम एक जिम्मेदारी के पद पर हो तुम्हें अपनी छात्राओं के सम्मुख एक उदाहरण प्रस्तुत करना है। "[28] सुषमा को अपने पद की गरीमा समझाती है। साथ ही सुषमा पर आनेवाले संकट के प्रति सजक्ष्ग करती है।

विदेश में शिक्षा प्राप्त सुसंस्कृत नवयुवक से विवाह करने की कामना करनेवाली मीनाक्षी एक व्यावहारिक व्यापारी से विवाह करने को राजी हो जाती है। वह अपने भविष्य को संवारना चाहती है। इस कारण वह जल्द ही विवाह का निर्णय लेती है। डॉ. शहनाज अकुली लिखते हैं, "मीनाक्षी ही सुषमा का दुःख समझती थी। वह अकेली जानती थी कि सुषमा कितना झेल रही है। उसके सौंदर्य प्रसाधनों के पीछे की यथार्थता मीनाक्षी ने देखी थी। "[29] इस प्रकार मीनाक्षी मुक्त विचार, खुले आचरण वाली, एक अच्छी सहेली, सुषमा की हमदर्द के रूप में उपन्यास में उभरी है। हर वक्त सुषमा का अपने घेरे से बाहर निकालने की कोशिश मीनाक्षी करती है। मीनाक्षी एक आदर्श सहेली के रूप चित्रित है।

3.1.6.1 सुषमा (प्रेमिका)

'पचपन खंभे लाल दीवारें ' इस उपन्यास में सुषमा प्रेमिका के रूप में चित्रित है। हर नारी को एक जीवनसाथी की चाह होती है। चाहे वह कितने भी ऊँचे पद पर क्यों न हो। सुषमा नील नामक होनहार नवयुवक से प्रेम करती है किंतु सुषमा कॉलेज में वार्डन पद पर कार्यरत होने के कारण वह नील से मिलने से ड.रती है। दूसरी तरफ परिवार में अपाहिज़ पिता, स्वार्थी माँ, कुछ बनने के सपना लिये हुए छोटे. भाई–बहन इनको भी सुषमा अकेला नहीं छोड़ना चाहती थी। सुषमा अपने प्रेमी नील से कहती है, "मेरी भावना का कोई स्थान नहीं। विवाह करके परिवार को निराधार छोड़ देना मेरे लिए संभव नहीं। मैंने अपने को ऐसी जिंदगी के लिए ढ.ाल लिया है। तुम चले जाओगे तो मैं फिर अपने को उन्ही प्राचीरों में बंदी कर लूँगी। "[30] सुषमा परिस्थितिवश नील को चाहते हुए भी ठुकराती है। वह कहती है, "प्रेमिका और पत्नी में बहुत फर्क होता है। फिर मैं यह नहीं चाहूँगी की नील के मन में कभी भी यह विचार आए कि उससे गलती हुई और फिर घर भी तो है। पिताजी ने मुझे लिखा है कि यदि प्रोव्हिडेंट फंड से चार हजार रुपया कर्ज़ ले सकूँ तो बाकी का वह प्रबंध कर लेंगे और तब निरुपमा की शादी होना संभव हो जाएगा। दो–एक साल में प्रतिमा भी शायद विवाह करना चाहे। "[31] सहयोगी अध्यापिका जब सुषमा पर भले–बुरे आरोप करती है। तब सुषमा न चाहते हुए भी कहती है, "नील, अब तुम मुझसे न मिला करो। " सामाजिक प्रतिष्ठा के कारण नील को चाहते हुए भी वह नकारती है। अतः कहा जा सकता है की सुषमा एक असफल प्रेमिका के रूप में अपना जीवन घुट.–घुट. कर जीती है।

एक ओर पारिवारिक जिम्मेदारी है तो दूसरी ओर समाज का ड़र भी सुषमा को लगा रहता था। सुषमा का विचार था कि विवाह के बाद अपने परिवार की जिम्मेदारी कौन लेगा? इसी कारण चाहते हुए भी सुषमा शादी न कर सकी। सुषमा चारित्र्य संपन्न प्रेमिका के रूप में है। सुषमा किसी स्वार्थ या धन की प्राप्ति के लिए नील से प्रेम नहीं करती थी। प्रेम में असफल होकर घुट–घुट कर मरनेवाली प्रेमिका के रूप में सुषमा चित्रित है। सुषमा असफल प्रेमिका के रूप में चित्रित है।

3.1.7.1 मौसी

'पचपन खंभे लाल दीवारें ' इस उपन्यास में कृष्णा मौसी अम्मा की छोटी बहन है। कृष्णा मौसी को सुषमा से अपनत्व एवं आत्मीयता है। सुषमा के विवाह की चिंता मौसी को सताती रहती है। मौसी चाहती है सुषमा का विवाह जल्द से जल्द हो इस कारण मौसी अम्मा को कहती है, "तो क्या दीदी सुषमा को कुँआरी रखोगी? इसका ब्याह नहीं करोगी जो अभी से नीरु के लिए दहेज जोड़ने लगी। "[32] कृष्णा मौसी अपनी जीजी को सचेत करते हुए कड़वी पर सच्ची बातें बताती है। जब अम्मा कहती है सुषमा स्वयं जिस युवक को पसंद करें हम उसका स्वीकार कर लेगें। तब अम्मा को फट.कारते हुए मौसी कहती है, "अरे जाओ दीदी लड़की की उम्र थी तब तो आज़ादी दी नहीं। अब वह कहाँ ढूँढ.ने जाएगी। लड़कियाँ सभी की होती है, शादियाँ भी सभी करते हैं। "[33] वैसे ही सुषमा को भी समाज में विवाह की अनिवार्यता को समझाती है। सुषमा को अपने भविष्य को सँवारने के लिए सलाह देती है। अतः मौसी सुषमा के दुःख को समझती है। उपन्यास में मौसी ममतामयी रूप में चित्रित है।

3.1.7.2 मामी

'पचपन खंभे लाल दीवारें ' उपन्यास में मामी वात्सल्यमयी रूप में चित्रित है। जब सुषमा के माता–पिता विवाह की चिंता छोड़ देते हैं। तब सुषमा की मामी को दुःख होता है। मामी कहती है, "मैं तो कहूँगी कि एक लड़की का गला काट.कर दूसरी का ब्याह रचाकर बड़ी बीबी ने अच्छा नहीं किया। सुषमा के कंधें पर छः हजार रुपयों का बोझ डालना कहाँ का न्याय है। "[34] मामी सुषमा के माँ बाप को सुषमा का दुःख समझने के लिए कहती है। इस प्रकार मामी सुषमा भविष्य के प्रति चिंता व्यक्त करती है।

3.2.1 अध्यापिका

3.2.1.1 सुषमा

'पचपन खंभे लाल दीवारें ' इस उपन्यास की सुषमा कॉलेज में अध्यापिका एवं वार्डन है। सुषमा यह पद बडी जिम्मेदारी से सँभालती है। उपन्यास की नायिका सुषमा का नौकरीपेशा जीवन घुटनभरा है। माँ–बाप की दृष्टि से सुषमा केवल पैसे कमाने का साधन मात्र है। पारिवारिक जिम्मेदारी के कारण सुषमा विवाह से भी वंचित रहती है। सुषमा नील नामक होनहार नवयुवक से प्रेम करती है। सह–अध्यापिकाओं के षड़यंत्र के कारण सुषमा नील को ठुकरा देती है। मि. शास्त्री, मि. पुरी, मि. रायचौधरी आदि सह अध्यापिकाएँ बहुत ही द्वेषपूर्ण स्वभाव वाली है। सुषमा की प्रगति देखकर वह जलती है एवं वह सुषमा पर चारित्र्यहिनता का आरोप लगाती है। इस कारण सुषमा को अपनी नौकरी का क्षेत्र घुटनभरा लगता है। पारिवारिक जिम्मेदारी के कारण सुषमा नौकरी नहीं छोड़ सकती। परिवार एवं पद की गरीमा के ख.ातिर सुषमा प्रेम एवं विवाह से वंचित रहती है।

सुषमा की सह–अध्यापिका स्वाति 'बंगला' की अध्यापिका है। स्वाति के रहस्यमय आचरण के कारण सबकी चर्चा का विषय बनी हुई है। गर्भवती होने के कारण एक दिन स्वाति नींद की गोलियाँ खाकर आत्महत्या का प्रयत्न करती है। स्वाति के प्रति सुषमा के मन में गहन करुणा उपजती है। कॉलेज में स्वाति के बारे में स्टॉफ रूम में उसी विषय की चर्चा हो रही थी। स्वाति के बारे में मिसेज पुरी भली–बुरी बातें कह रही थी। उनकी बात को रोकते हुए सुषमा कहती है, "ऐसी बात, मिसेज पुरी, क्या आपको शोभा देती है? कुछ भी हो स्वाति हममें से ही एक थी। आज आप उसे कह रही है, कल किसी और को कहेंगी। "[35] फिर मिसेज पुरी सहम–सी गयी लेकिन तुरंत सँभलकर बोली, "सामाजिक मापदंडों का जो उल्लंघन करता है, उसे दंडित होना ही पड़ता है सुषमा। मुझे स्वाति से बिलकुल भी सहानुभूति नहीं है। "[36] सुषमा को इस बात पर क्रोध आता है। सुषमा स्वाति का पक्ष लेकर कहती है, "सामाजिक मापदंड यह कहते हैं कि आप सबके सामने किसी के व्यक्तिगत जीवन की धज्जियाँ उड़ा दीजिए? हरेक का जीवन एक ऐसा अनुलंघनीय दुर्ग है जिसका अतिक्रमण करना किसी का अधिकार नहीं है, यदि आपको पता था कि स्वाति किसी

परेशानी में है तो आपको सहायता करनी चाहिए थी। वह लड.की दूर देश से आकर अस्पताल में पडी है और आप ...?"[37] इस प्रसंग से सुषमा बताना चाहती है कि महिलाएँ चाहे प्रबुद्ध, प्रगतिशील बनने का दम भरती हो किंतु मुसीबत में फँसी स्वाति को मदद करना तो दूर उसकी दशा पर सह अध्यापिकाएँ हँसती है। अतः नौकरी करते समय नारी को केवल पुरुष ही बाधक नहीं बनता तो ईर्ष्या के कारण नारी ही नारी की शत्रु बनती दिखाई देती है। डॉ. वंदना मोहिते लिखती है, "नारी का नौकरी पेशा जीवन चरित्र–हिन बना दिया गया है। नौकरी के क्षेत्र में उसकी भावनाओं को कोई नहीं समझता। इसी कारण नौकरी चाहे कितनी भी ऊँची हो परंतु नारी को उसमें सुख की प्राप्ति नहीं होती। सुषमा तो पारिवारिक जीवन के लिए सब कुछ करती है परंतु शादी नहीं कर सकती। ऐसी अवस्था में नौकरी क्षेत्र में भी सहपाठिनियों का सहारा नहीं मिलता। सुषमा आधुनिक होते हुए भी समाज के ड.र से नौकरी पेशा में जो करना चाहती है वह कर नहीं सकती। "[38]

एम. ए. करने के बाद नौकरी पाने के लिए जब सुषमा कॉलेज में गयी तो वहाँ के सेक्रेटरी नगर के पुराने रईसों में से थे। उन्होंने जब अनैतिक संबंधों की माँग की तो सुषमा नौकरी से इस्तीफा दे देती है। सुषमा निर्धन भले थी किंतु वह स्वाभिमानी थी वह चाहती तो शरीर के मोल से धन और आराम पा सकती थी। पर सुषमा ने दल–दल में भी अपने चारित्र्य को बचाये रखा। उषा प्रियंवदा सुषमा के माध्यम से यह संदेश देना चाहती है कि पैसे और नौकरी के लिए वासना का शिकार मत बनो उसका डटकर विरोध करों। नौकरी पर अपनी पद की गरीमा एवं पवित्रता बरकरार रखो। उपन्यास में सुषमा एक आदर्श अध्यापिका की प्रतिमा में है।

3.2.1.2 मिस. पुरी

'पचपन खंभे लाल दीवारें ' इस उपन्यास में मिस. पुरी सुषमा की सह–अध्यापिका है। जो संस्कृत विषय पढ़ाती है। मिस. पुरी से कभी किसी की खुशी बरदाश्त नहीं होती थी। जब स्वातिगर्भवती होने के कारण खुदखुशी का प्रयत्न करती है। तब मिस. पुरी इस प्रसंग पर अपनी टिप्पणी देते हुए कहती है, मुझे उसके रंग–ढंग देखकर ही शक होता था। पार्ट–टाईम बंगला की लेक्चरर, उसमें हर रोज साठ–पैंसठ रुपए की साड़ी पहनना कैसे संभव हो सकता था। सुषमा के खिलाफ

षड़यंत्र रचने के लिए मि. शास्त्री का साथ देती है। कॉलेज में एक दूसरे की निंदा करती रहती है। मिस. पुरी ईर्ष्यालु स्वभाव वाली है। वह संकुचित मनोवृत्तिवाली अध्यापिका है।

3.2.1.3 मिस. शास्त्री

'पचपन खंभे लाल दीवारें ' इस उपन्यास में मिस. शास्त्री संस्कृत विषय पढाती है। इसके साथ ही पूरे कॉलेज में किस छात्रा की किस युवक के साथ दोस्ती है। कौन कितने बजे रात को लौटता है, कौन अध्यापिका के घर पैसे भेजता है। सबकी निंदा मिस. शास्त्री करती रहती है। मिस. शास्त्री को सुषमा का उँचे पद पर होना हमेशा खट.कता है। इसी कारण वह सुषमा से जलती है एवं सुषमा के खिलाफ षड़यंत्र रचती है। प्रधानाचार्य को झूठी रिर्पोट करती है। सुषमा पर अनैतिक आचरण का आरोप मिस. शास्त्री लगाती है। हमेशा दूसरों की जिंदगी में टाँग अड.ाती रहती है। खुद जीवन भर प्रेम से वंचित होने के कारण सबको संदेह की नज़रो से देखती है। उनकी इसी निराशा के कारण उनका जीवन के प्रति दृष्टिकोण विकृत हो गया है। मिस. शास्त्री के संदर्भ में डॉ. शहनाज अकुली लिखते हैं, "दूसरों के प्रेम सम्बन्ध की निगरानी करने वाली अविवाहित मिस. शास्त्री पैंतालीस साल की आयु में बिल्ली पालकर अपना सारा प्यार बिल्ली पर उंडे.लकर अपने भीतर की वासना को पूर्ण कर लेना चाहती है। दूसरे को अनाचार का पाठ पढ़ानेवाली खुद जीवन के प्रति निष्क्रिय हो गई हैं। स्वाति के गर्भपात को लेकर वह तरह–तरह की बातें करती है। सामाजिक मापदण्ड के उल्लंघन करने का दण्ड वह स्वाति को दिला ही देती है। "[39] स्वाति के गर्भपात को लेकर हर वक्त उसे ताने देती रहती है। सामाजिक मापदंड के उल्लंघन करने का दंड स्वाति को दिला देती है।

अतः कहा जा सकता है कि मि. शास्त्री अविवाहित होने के कारण कुण्ठाग्रस्त हो गयी है। जिससे किसी की सफलता देखी नहीं जा सकती है। अतः कहा जा सकता है कि मि. शास्त्री कुण्ठाग्रस्त मनोवृत्तिवाली अध्यापिका है।

3.2.7 नौकरानी

3.2.7.1 भौंरी

'पचपन खंभे लाल दीवारें ' में सुषमा के घर में भौंरी नामक नौकरानी है। भौंरी सुषमा की संवेदनाओं एवं भावनाओं को समझती है। वह अनपढ़ है किंतु पढ़ी–लिखी भ्रष्ट अध्यापिकाओं से ज्यादा अकलमंद एवं समझदार है। डॉ. शहनाज अकुली भौंरी के बारे में लिखते हैं, "भौंरी वहीं एक जानती है कि सुषमा कितना झेल रही है। इसी कारण सुषमा के खिलाफ षड़यंत्र रचने वाली मिस. शास्त्री को सबक सिखाने के लिए उसकी बिल्ली को अपने सिपाही पति के पास मरवाकर फिकवा देती है। तभी वह आत्मतुष्ट होती है। मि. शास्त्री को दुःखी करके वह बतला देती है कि अकेलापन कितना भयावह होता है। "[40] भौंरी सीधी और ईमानदार नौकरानी के रूप में चित्रित है। लेखिका भौंरी के माध्यम से बताना चाहती है, जहाँ पढ़ी–लिखी महिलाएँ एक–दूसरे से जलती है एवं एक–दूसरे को नीचा दिखाने का प्रयत्न करती है। वहीं भौंरी अनपढ़ होकर भी समझदारी से सुषमा को दुःख में साथ देती है। भौंरी ही जानती है की सुषमा कितना दुःख सहती है। लालच के कारण महिला हो या पुरुष अपने आप में बिखरते हुए दिखाई देते हैं। ईर्ष्या के कारण एक–दूसरे को नीचा दिखाने के लिए किसी भी स्तर पर जाते हैं। वहीं निम्न वर्ग के लोगों में अपनत्व का भाव और समझदारी है। अपनत्व भरा व्यवहार भौंरी द्वारा दिखाई देता है। अपनी मालकिन के प्रति वफादार नौकरानी के रूप में भौंरी दिखाई देती है।

संदर्भ सूची

1. सं. एकान्त श्रीवास्तव और कुसुम खेमानी, वागर्थ, जून 2014 पृ. 11

(उषा प्रियंवदा के लेख से)

2. उषा प्रियंवदा शून्य तथा अन्य रचनाएँ पृ. 113

3. उषा प्रियंवदा संपूर्ण कहानियाँ पृ. 10

4. डॉ. ओमप्रकाश शर्मा समकालीन महिला लेखन पृ. 145

5. उषा प्रियंवदा संपूर्ण कहानियाँ पृ. 07

6. वहीं वहीं पृ. 09

7. वहीं वहीं पृ. 09

8. उषा प्रियंवदा शून्य तथा अन्य रचनाएँ पृ. 127

9. उषा प्रियंवदा शून्य तथा अन्य रचनाएँ पृ. 127

10. सं. एकान्त श्रीवास्तव और कुसुम खेमानी, वागर्थ, जून 2014 पृ. 10

(उषा प्रियंवदा के लेख से)

11. वहीं पृ. 10

12. वहीं पृ. 11

13. उषा प्रियंवदा शून्य तथा अन्य रचनाएँ पृ. 122

सं.एकान्त श्रीवास्तव और कुसुम खेमानी, वागर्थ, जून 2014 पृ. 10

14. (उषा प्रियंवदा के लेख से)

15. उषा प्रियंवदा शून्य तथा अन्य रचनाएँ पृ. 123

16. डॉ. ओमप्रकाश शर्मा समकालीन महिला लेखन पृ. 145

17. उषा प्रियंवदा भया कबीर उदास पृ. 14

18. वहीं पृ. 172

19. उषा प्रियंवदा संपूर्ण कहानियाँ फ्लैप

20. वहीं पृ. 17

21. उषा प्रियंवदा पचपन खंभे लाल दीवारें पृ. 56

22. वहीं पृ. 09

23. डॉ. वंदना मोहिते आठवें तथा नवें दशक के हिंदी उपन्यासकारों में नारी पृ. 60

24. उषा प्रियंवदा पचपन खंभे लाल दीवारें पृ. 19

25. वहीं पृ. 19

26. डॉ. वंदना मोहिते आठवें तथा नवें दशक के हिंदी उपन्यासकारों में नारी पृ. 34

27. उषा प्रियंवदा पचपन खंभे लाल दीवारें पृ. 28

28. वहीं पृ. 50

29. डॉ.शहनाज अकुली उषा प्रियंवदा की उपन्यास सृष्टि पृ. 89

30. उषा प्रियंवदा पचपन खंभे लाल दीवारें पृ. 56

31. वहीं पृ. 99–100

32. उषा प्रियंवदा पचपन खंभे लाल दीवारें पृ. 09

33. वहीं पृ. 09

34. वहीं पृ. 106

35. उषा प्रियंवदा पचपन खंभे लाल दिवरें पृ. 145

36. वहीं पृ. 12

37. वहीं पृ. 79

38. डॉ. वंदना मोहिते आठवें तथा नवेंदशक के हिंदी उपन्यासकारों में नारी पृ. 172

39. डॉ. शहनाज अकुली उषा प्रियंवदा की उपन्यास सृष्टि पृ. 90

40. डॉ. शहनाज अकुली उषा प्रियंवदा की उपन्यास सृष्टि पृ. 91

उपन्यास के प्रधान तत्वों की दृष्टि से "पचपन खंभे लाल दीवारें" की आलोचना कीजिए।

कथानक

चरित्र–चित्रण

कथोपकथन

वातावरण

भाषा –शैली

उद्देश

"पचपन खंभे लाल दीवारें" एक सोद्देश्य उपन्यास है" इस कथन की विवेचन करते हुए बताइये कि उषा प्रियंवदा इस उपन्यास से क्या कहना चहाती है**?**

"पचपन खंभे लाल दीवारें" उपन्यास सुषमा के माध्यम से बदलती नारी प्रतिमा मुखरित हुई है स्पष्ट कीजिए।

सुषमा का चरित्र–चित्रण अपने शब्दों में कीजिए।